RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

वर्ष : 11	अंक : 1	मुम्बई, अप्रैल 2021	पृष्ठ : 36	मूल्य : ₹25	हिन्दी
VOLUME : 11	ISSUE : 1	MUMBAI, APRIL 2021	PAGES : 36	PRICE : ₹25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2547

दर्शनोदय अतिशय क्षेत्र, थूबोन जी में स्थित भगवान श्री मल्लिनाथ स्वामी की प्राचीन प्रतिमा

परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्भुत भेंट

दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारुप

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रुप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है।आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रुपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

मंगल आशीर्वाद

प.पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारुप

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रुप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।

भावी योजनाएँ— 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संगहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. नन्द्यावर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

साहू अखिलेश जैन	राजकुमार जैन	सतीश चन्द जैन SCJ	नरेश जैन (कामधेनु), दिल्ली	अनिल जैन	मुकेश जैन	राकेश जैन	राजेन्द्र जैन
मुख्य संरक्षक	अध्यक्ष	अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था	अध्यक्ष—अकाऊंट उपसमिति	कार्याध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	निर्माण समिति	मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड) **पुनीत जैन** (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA ISPAT LIMITED

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi,
Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in
Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया TMT Grade Fe 415,500,550

जनगणना 2021- इस बार जैन लिखवाना न भूलें

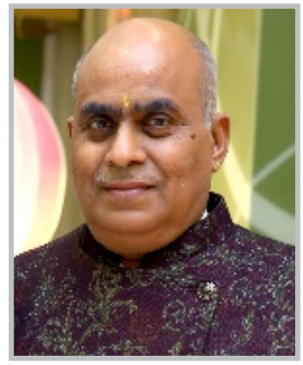

जनगणना किसी भी राष्ट्र के महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। सरकारों के लिए देश की जनसंख्या का आँकलन करके जनता की मूलभूत आवश्यकताओं के अनुसार नीति व योजनाएँ बनाना व उसका क्रियान्वयन करना सरल हो जाता है।

जैसा कि पिछले कई वर्षों से केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा नीतिगत निर्णय जनसंख्या के आधार पर ही लिए जा रहे हैं और उसमें जैन समाज की उपेक्षा की जाती है क्योंकि सरकारी आँकड़ों के हिसाब से देश में जैनों की जनसंख्या 44 लाख है यानी बहुत कम है, तो धार्मिक, राजनीतिक और अन्य गतिविधियों में जैन धर्म के लोगों को गंभीरता से नहीं लिया जाता है, वर्तमान संसद में 543 सांसद हैं पर उनमें से एक भी सांसद जैन नहीं है। हमारे हजारों वर्ष प्राचीन मंदिरों व मूर्तियों के संरक्षण के लिए सरकारी सहायता नहीं मिलती है पर कुछ धर्मों के धर्म स्थलों पर तैनात कर्मचारियों को सरकार की ओर से वेतन तक दिया जाता है। उनके धार्मिक स्थलों के निर्माण व मरम्मत आदि के लिए बजट में प्रावधान किया जाता है। सड़कों, रेल व वायु मार्ग का नेटवर्क तैयार किया जाता है। जबकि लगातार माँग करने बाद भी हमारे शिखरजी, पावापुरी, कुंडलपुर आदि बड़े क्षेत्रों में से एक पर भी रेल स्टेशन नहीं है। सम्मेद शिखरजी के लिए रेल लाइन मंजूर हो गई है पर 2 वर्षों से एक रुपये का प्रावधान केंद्रीय बजट में नहीं किया गया है।

चुनाव के समय भी विभिन्न राजनीतिक पार्टियों द्वारा हमारे समाज के लोगों व नेताओं को जन प्रतिनिधि बनने का अवसर नहीं दिया जाता है जिससे राजनीतिक रूप से जैन समाज कमजोर होता जा रहा है। जिसका प्रभाव हमारे अस्तित्व और हमारे बच्चों के भविष्य पर पड़ रहा है, हमारे तीर्थ क्षेत्र संकट में हैं। हाल ही में कर्नाटक के उडुपी जिले में स्थित प्राचीन जैन मंदिर की जमीन व जैन मंदिर राजस्व विभाग ने वक्फ बोर्ड को सौंप दिया है, जिस पर हमने विरोध दर्ज करवाया है।

प्रश्न उठता है कि क्या जैन धर्म के लोग सचमुच 0.04 प्रतिशत हैं ? इसका उत्तर है नहीं, हम देश की जनसंख्या के इतने कम पायदान पर नहीं हैं, परंतु फिर भी सरकारी आंकड़ों में हमारी संख्या बहुत कम प्रदर्शित हो रही है, इसके पीछे क्या कारण है, आइये कुछ प्रश्नों के उत्तर देकर हम खोजते हैं ?

1) हमारे नाम के पीछे जो उपनाम लिखा है, क्या वह जैन है या हमने अपने गोत्र आदि को अपने उपनाम के स्थान पर लगाया हुआ है ?

2) जब भी हमसे हमारे धर्म / जाति के बारे में पूछा जाता है तो क्या हम जैन लिखते हैं या कुछ और?

3) हमारे आधार कार्ड तथा अन्य दस्तावेजों में हमने हमारा धर्म क्या लिखवाया हुआ है?

एक अनुमान के हिसाब से जैन जिस स्थिति से गुज़र रहे हैं, 2041 की जनगणना तक देश की जनसंख्या से जैन लगभग समाप्त हो जाएँगे। विचार कीजिये कितनी भयावह स्थिति होगी।

भारत सरकार की ओर से 2021 की जनगणना की प्रक्रिया 1 अप्रैल 2021 प्रारम्भ हो चुकी है। जैन समाज की सभी धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं से आग्रह करता हूँ कि जनगणना के बारे में जागरुकता के लिए जैन समाज के घर-घर और व्यक्ति-व्यक्ति तक यह अभियान चलाएँ और लगातार चलाएँ कि 2021 की जनगणना के लिए जब सरकारी कर्मचारी आपसे जानकारी लेने आए तब उससे फार्म या ऑनलाइन फार्म के धर्म के कॉलम में अपने सामने ही जैन दर्ज करवाएँ, इस बार हमें चूकना नहीं है। इससे पहले हम 1991, उसके बाद 2001 और 2011 में हुई जनगणनाओं में यह अवसर गँवा चुके हैं।

जनगणना का काम खर्चीला, समय खपाऊ और बहुत दुरूह होता है और 140 करोड़ लोगों में से जैनों की गिनती करना किसी सामाजिक संस्था के लिए व्यावहारिक नहीं लगता है। परम पूज्य मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज ने इस दिशा में काफी सार्थक प्रयास करवाए हैं पर हमारा देश बहुत बड़ा है और जनगणना का काम बहुत लंबा चलता है इसलिए मेरा यही अनुरोध है कि देश की छोटी-बड़ी संस्थाएँ केवल 1 साल तक इसी काम में लग जाएँ तो हम सरकारी जनगणना से हमारा लक्ष्य प्राप्त कर सकेंगे।

अध्यक्ष कार्यालय के संपर्क सूत्र :
प्रवीण जैन, मो नं. : 7506735396
ईमेल : info@prabhatji.com
वेब साइट : www.Prabhatji.com

प्रभातचंद्र जैन
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

तीर्थक्षेत्र कमेटी और दिगंबर जैन समाज

पिछले अंक में मैंने बल दिया था कि वर्तमान समय में दिगंबर जैनों की प्रतिनिधि संस्था भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक स्तर पर मजबूत बनाना होगा, वर्तमान समय में यह बहुत ही अपरिहार्य हो चुका है क्योंकि तीर्थक्षेत्र कमेटी एक ऐसी सबसे पुरातन संस्था है जिसमें दिगंबर जैन समाज के हर वर्ग व हर आम्नाय का प्रतिनिधित्व है और संस्था गत् 100 से ज्यादा वर्षों से पुरातन तीर्थों के संरक्षण के कार्य में संलग्न है इसलिए हर दिगंबर जैन परिवार का कर्तव्य है कि वो इस संस्था को अपना सहयोग प्रदान कर मजबूत बनाए।

हमारा ढाई वर्ष का कार्यकाल अगले महीने पूरा हो रहा है, 25 मई 2021 से नये लोग कार्यभार संभालेंगे। दिसंबर 2018 में कार्यभार संभालने के बाद 2-3 महीने तो कार्यप्रणाली को नियमित करने में निकले। एक साल हमें काम करने को मिला, इसके बाद सवा साल कोरोना महामारी की भेंट चढ़ गया। कहने का अर्थ यह है कि हमें काम करने के लिए काफी कम समय मिला। इस अल्प समय में हमसे जो हो सकता था, हमने किया। जो कुछ अच्छा हुआ वह समाज का है और जो-जो गलतियाँ रह गई हों वे केवल हमारी है:

1. महाराष्ट्र के बाढ़ से पीड़ित व बेघर हुए हजारों जैन परिवारों में से लगभग 50 परिवारों के घर बनाकर देने का कार्य भी इस कमेटी ने किया जो अपने आप में एक ऐतिहासिक कार्य है। बाढ़ राहत में हमारे माननीय अध्यक्ष श्री प्रभात चंद्र जी जैन के नेतृत्व में जो कार्य हुआ वह अनुकरणीय व स्तुत्य है।

2. कोरोना काल में भी हमने जहाँ जितना, जहाँ हो सकता था, आर्थिक सहयोग भेजा ताकि हमारे मंदिरों, मठों, तीर्थक्षेत्रों की गतिविधियाँ चलती रहें। इस अवधि में 1600 जैन परिवारों को नगद राशि प्रदान की गई। इन सभी कार्यों की सूचना तीर्थ वंदना के माध्यम से दी गई।

3. देशभर की सभी जैन धर्मशालाओं को भी एक मंच पर लाने के लिए हमने एक महत्वाकांक्षी योजना शुरू की है इससे देश की हर धर्मशाला डिजिटल हो जाएगी और धर्मशालाओं की स्थिति व सुविधाओं में सुधार होगा। इस दिशा में काम चल रहा है। मैं देशभर के जैन समाज का आह्वान करता हूँ कि आप सभी तन-मन-धन से इस योजना से जुड़ें।

4. हम सभी के आराध्य श्रीमद् आचार्यदेव श्री कुंदकुंद स्वामी की जन्मभूमि रससिद्धिला गुट्टा आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले के कोनाकुंडला ग्राम में स्थित है, जो कि दक्षिण रेलवे के गुंटकल जंक्शन से मात्र 6 किमी की दूरी पर स्थित है। आज यहाँ की स्थिति अत्यंत दयनीय है, समाज को इस जन्मभूमि के होने की जानकारी भी नहीं है। आज हमारे पास अवसर है कि उसका जीर्णोद्धार करें। इसके लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी प्रयासरत है पर कमेटी के प्रयास तभी सफल होंगे जब इस कार्य में समाज का हर परिवार किसी न किसी रूप सहयोगी बने। मेरा अनुमान है कि देश में छोटे-बड़े दिगंबर जैन परिवारों की संख्या लगभग 4 लाख होगी, यदि उनमें से एक चौथाई अर्थात् 1 लाख परिवार भी मात्र 2100 रु का दान इस महान् कार्य के लिए प्रदान करें तो हम इस महान् तीर्थ का कायाकल्प कर सकते हैं। आशा करता हूँ कि समाज के चिंतनशील श्रावक श्राविकाएँ इस के लिए अवश्य ही आगे आएँगे।

5. हमने अपने कार्यकाल में हरित तीर्थ अभियान आरंभ किया जिसके अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों पर वृक्षारोपण की पहल शुरु की गई है। हमारा लक्ष्य है कि अगले 5 वर्ष में देश का प्रत्येक जैन तीर्थक्षेत्र हरियाली से खिल उठे। सभी तीर्थक्षेत्रों की कमेटियाँ 2021 में अपने क्षेत्रों पर कम से कम 1100 पौधों का रोपण करवाएँ।

6. मुनियों के विहार के मार्गों पर पड़ने वाले विभिन्न स्थानों पर शुद्ध जल की व्यवस्था के लिए चलते फिरते तीर्थ योजना चलाई गई जिसमें वर्षा जल संचय के कमेटी की ओर से जलकुंभ निर्माण के लिए अनुदान दिया गया है।

7. तीर्थरक्षा कलश की योजना के अंतर्गत हमने देश भर के समाज का आह्वान किया था व परम पूजनीय साधु भगवंतों के अनुरोध किया था कि चातुर्मास कलश स्थापना में एक कलश तीर्थरक्षा कलश के नाम से स्थापित किया जाए और उसकी राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा तीर्थ संरक्षण में खर्च की जाएगी, आगामी वर्षों में इसके अच्छे परिणाम आने की संभावना है।

राजेन्द्र के. गोधा
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष व महामंत्री
प्रधान संपादक, तीर्थवंदना

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 11 अंक 1 अप्रैल 2021

श्री प्रभातचन्द्र जैन अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र गोधा कार्याध्यक्ष/महामंत्री
श्री शिखरचन्द पहाड़िया वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल दोशी उपाध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.) उपाध्यक्ष
श्री गजराज गंगवाल उपाध्यक्ष
श्री तरुण काला उपाध्यक्ष
श्री के.सी. जैन(काला) कोषाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा मंत्री
श्री विनोद कोयलावाले मंत्री
श्री खुशाल जैन (सी.ए.) मंत्री
श्री जयकुमार जैन (कोटावाले) मंत्री

संपादकीय सलाहकार
पद्मश्री डॉ.कैलाश मड़वैया
डॉ.श्रीमती नीलम जैन
डॉ.अनेकांत जैन
पंडित श्री अरुणकुमार जैन, शास्त्री

परामर्श मंडल
श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
श्री शरद जैन
श्री विनोद बाकलीवाल
श्री कमलबाबू जैन
श्री सुरेश सबलावत

संपादक मंडल
प्रधान संपादक
श्री राजेन्द्र के.गोधा
संपादक-साज सज्जा संपादक
श्री मनीष बैद श्री उमानाथ रामअजोर दुबे
उप संपादक
श्री किरण प्रकाश जैन श्री प्रवीण जैन(सी.एस.)
श्री लवकेश जैन श्री विजय धुर्रा

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
website : www.tirthkshetracommittee.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
whatsapp no.- 7718859108

मूल्य
वार्षिक : 300 रुपये
त्रिवार्षिक : 800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष) : 2500 रुपये

ढाँक ग्राम (राजकोट), गुजरात में तीसरी सदी की उपेक्षित जैन गुफाएँ 6

द्वितीय शताब्दी की जैन (अब बौद्ध) गुफाएँ गुंटुपल्ली, पश्चिमी गोदावरी, आंध्रप्रदेश 7

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, बाहुबली गिरि, मुम्ब्रा (बृहन्मुंबई) 9

अयोध्या नगरी, इक्ष्वाकु वंश और आदि तीर्थंकर ऋषभदेव 10

भगवान ऋषभदेव ने मानव जाति को स्वावलम्बन की कला सिखाई 13

अयोध्या के दार्शनिक राजा ऋषभदेव 14

काम विजेता भगवंत महावीर 15

तीर्थंकर महावीर की प्रासंगिकता 16

मध्य भारत का सबसे बड़ा अतिशय क्षेत्र दर्शनोदय तीर्थ थूबोनजी 17

अद्वितीय विद्वान पंडित श्री गोपालदासजी वरैया 19

एक समृद्ध जैन विरासत केंद्र था कल्या 20

लोगों के मन पर राज करने वाला ही सच्चा नेता - आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज 22

विशेष निवेदन

तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी सदस्यों से निवेदन है कि वह अपने नाम एवं स्थान के साथ मोबाइल तथा ई मेल तीर्थक्षेत्र कमेटी को tirthvandana4@gmail.com पर भिजवाने की कृपा करें जिससे भविष्य में ई मेल अथवा मोबाइल पर अन्य विषयों की जानकारी तथा बैठकों आदि की सूचनाएं भिजवाई जा सके।

मंत्री

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में निःशुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

ढाँक ग्राम (राजकोट), गुजरात में तीसरी सदी की उपेक्षित जैन गुफाएँ

ढांक जैन गुफाओं का बाहरी दृश्य

यूँ तो गुजरात प्रान्त विशाल जैन मंदिरों के लिए विख्यात है, जिनमें से कई प्राचीन भी हैं, किन्तु यदि शैल कृत जैन गुफाओं की बात हो तो गुजरात में गिरनार पर्वत के अतिरिक्त कोई और नाम नहीं याद आता है। लेकिन ऐसी ही एक जैन गुफा गुजरात प्रान्त के काठियावाड़ क्षेत्र में स्थित है जिसके बारे में लोग न के बराबर जानते हैं, वो है ढाँक की जैन गुफाएँ। ये गुफाएँ गुजरात के राजकोट जिले के उपलेटा नगर के पास ढाँक ग्राम में स्थित हैं जो राजकोट से लगभग ११० किमी की दूरी पर स्थित है, जबकि जैनों के प्रसिद्ध तीर्थ गिरनार से ये मात्र ७८ किमी की दूरी पर ही स्थित है। प्राचीनकाल में इसे ढाँकगिरि भी कहा जाता था।

गुफाओं का इतिहास और महत्व-

ढाँक की गुफाएँ चूना और बलुआ पत्थर की चट्टानों से निर्मित हैं, जिन्हें काटकर और तराशकर गुफाओं का रूप दिया गया और बाद में चट्टानों पर जिन प्रतिमाएँ तराशी और उकेरी गईं। प्रसिद्ध पुरातत्व शोधकर्ता जेम्स वर्गीस के अनुसार ये गुफाएँ लगभग ७वीं सदी की है, जबकि प्रसिद्ध भारतीय

पुरातत्वविद प्रोफ़ेसर एच डी साँकलिया के अनुसार इन गुफाओं का काल तीसरी सदी का है और इसके प्रचुर प्रमाण उन्हें मिले हैं। इन गुफाओं का निर्माण पश्चिमी क्षत्रप राजाओं के काल का माना गया है। इन गुफाओं पर जैन और बौद्ध दोनों ही प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। इससे कहीं न कहीं ये भी पता चलता है कि हो सकता है कुछ समय के लिए ये गुफाएँ बौद्ध राजाओं और लामाओं के प्रभाव में रही होंगी। यहाँ से एक छोटी गुफा में बोधिसत्व की आकृति भी उत्कीर्ण मिली है, इससे उपर्युक्त कथन की पुष्टि होती है, किन्तु मुख्य रूप से ये गुफाएँ जैन धर्म से ही सम्बन्धित हैं और यहाँ यक्षी अम्बिका के अतिरिक्त तीर्थंकर ऋषभदेव, शांतिनाथ, और पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं, जो इन गुफाओं को जैन धर्म का सिद्ध करती हैं। यहाँ की जिन प्रतिमाएँ खड्गासन और पद्मासन दोनों ही अवस्था में हैं। यहाँ पर कुल ७ तीर्थंकर प्रतिमाएँ और १ यक्षी प्रतिमा एक साथ गुफा की बाहरी दीवार पर उत्कीर्ण हैं, जबकि तीन तीर्थंकर प्रतिमाएँ गुफा के अंदर उत्कीर्ण हैं।

ढाँक गुफाओं की ये प्रतिमाएँ, गिरनार (रैवतक) पर्वत के बाद काठियावाड़ क्षेत्र की सबसे प्राचीन जैन प्रतिमाएँ है। इन गुफाओं की गिरनार से मात्र ७८ किमी की दूरी ये भी सिद्ध करती है कि इस क्षेत्र में जैन धर्म का प्रभाव प्राचीन काल से है। साथ ही ये गुफाएँ गिरनार जाने वाले प्राचीन मार्ग पर स्थित थीं इससे ऐसा भी प्रतीत होता है कि जैन मुनियों और तीर्थ यात्रियों के दर्शन और पड़ाव की सुविधा के हिसाब से ही निर्मित की गयी होंगी। चूना चट्टान पर निर्मित होने के कारण तथा समय की मार से ये प्रतिमाएँ धुँधली और

गुफा की दीवार पर उत्कीर्ण जैन प्रतिमाएं

गुफा में उत्कीर्ण जैन प्रतिमाएं

गुफा में मूल जैन प्रतिमा

क्षरित हो गयी हैं, फिर भी आकृति, अंकन और लक्षणों के आधार पर तीर्थंकरों की पहचान की गयी है और इसका काल निर्धारण भी किया गया है जो कि तीसरी सदी माना गया है।

वर्तमान स्थिति तथा कर्त्तव्य-

वर्तमान में ये गुफाएँ सरकार के स्वामित्व में है किन्तु देखरेख बिल्कुल भी नहीं है। ग्राम से दूर होने और पहाड़ी के किनारे होने की वजह से असामाजिक तत्वों ने यहाँ डेरा जमा रखा है। आवश्यकता है हम अधिक से अधिक इस स्थान का भ्रमण करें और सरकार पर दबाव डालकर इसे संरक्षित और सुरक्षित कराएँ। साथ ही नित्य पूजा अर्चना की भी उनसे माँग कर सकते है। इन गुफाओं को बौद्ध गुफा ही साबित करने का प्रयत्न कतिपय लोगों, विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा स्वार्थवश किया जा रहा है, इस असत्य प्रचार को सफल नहीं होने देना है, ये भी हमारा कर्त्तव्य है।

द्वितीय शताब्दी की जैन (अब बौद्ध) गुफाएँ गुंटुपल्ली, पश्चिमी गोदावरी, आंध्रप्रदेश

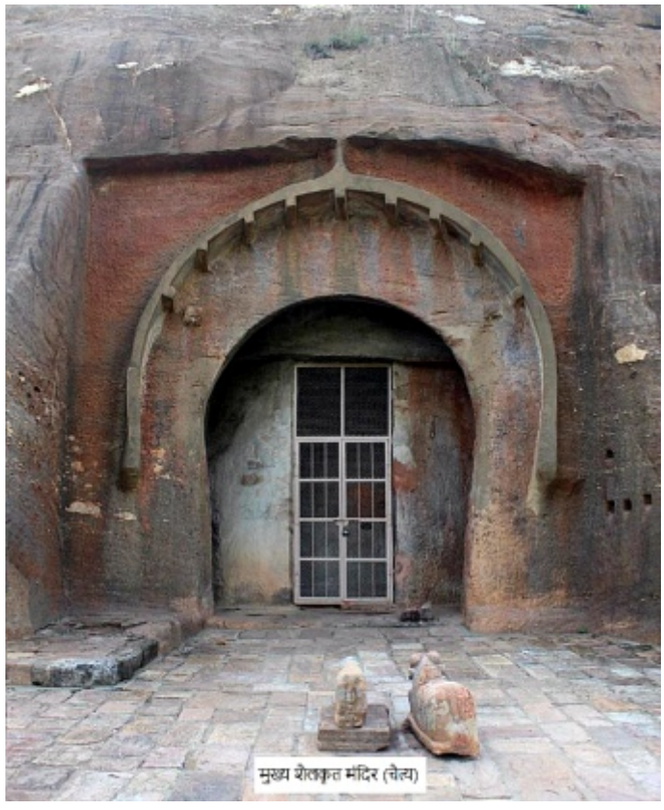
मुख्य शैलकृत मंदिर (चैत्य)

अन्य गुफाएं

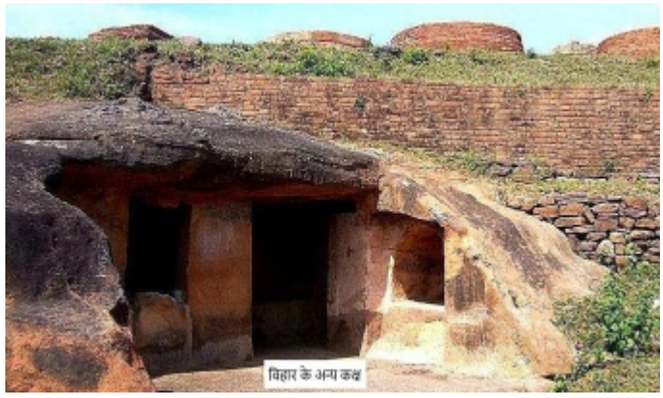
विहार के अन्य कक्ष

जैन और बौद्ध दोनों ही धर्म प्राचीन कलिंग और आंध्र में अत्यंत लोकप्रिय थे और अधिकांश लोग इनके अनुयायी थे। आंध्र प्रदेश में इसके प्रमाण के रूप में कई प्राचीन धरोहर, गुफाएँ और प्रतिमाएँ कई पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त हुई हैं, जिनमे कुछ जैन धर्म से तो कुछ बौद्ध धर्म से सम्बन्धित हैं। किन्तु कुछ स्थल ऐसे हैं जो जैन और बौद्ध दोनों से सम्बद्ध पाए गए हैं, ऐसा ही एक स्थल है- गुंटुपल्ली।

गुंटुपल्ली की प्राचीन गुफाएँ, चैत्य और विहार पुरातत्व और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत प्रसिद्ध है। गुंटुपल्ली आंध्र प्रदेश के पश्चिमी गोदावरी जिले में एलुरु से ४५ किमी दूरी पर स्थित है। गुंटुपल्ली की गुफाएँ और विहार चारों और हरी भरी पहाड़ियों से घिरा हुआ एक रमणीय स्थल है और स्वयं एक पहाड़ी पर ही स्थित है।

गुंटुपल्ली गुफाओं का इतिहास और महत्त्व

गुंटुपल्ली की गुफाएँ वस्तुतः आंध्र प्रदेश की सबसे प्राचीन चैत्य विहार और गुफाएँ है। इन गुफाओं का सबसे पहले निर्माण द्वितीय सदी ईसा पूर्व में हुआ, बाद में आठवीं सदी ईस्वी तक इसमें कुछ न कुछ परिवर्तन किये जाते रहे। ये वस्तुतः जैन गुफाएँ थीं, जिन्हें बाद में बौद्ध संतों ने अपना महाविहार बना लिया। स्थानीय लोग अपने कम ज्ञान की वजह से इसे पांडव गुफा कहते हैं। यहाँ मुख्यतः दो महाविहार, चार विहार, एक गोलाकार चैत्य, खम्भों से बना एक सभा मंडप, एक बड़ा स्तूप और कुछ छोटे स्तूपों के अवशेष मिले हैं। एक स्तूप पत्थर से बना हुआ है जबकि बाकी स्तूप ईंटों से बनाए गए हैं। चैत्य के द्वार पर पत्थर में महीन नक्काशी की हुई है, जो कि इसे विशेष बनाती है, देखने

अन्य विहार और स्तूपों के अवशेष

ईंटों से निर्मित कई छोटे स्तूप

पर ऐसा लगता है मानो लकड़ी पर कारीगरी की गयी हो। यहाँ से खुदाई में तीन डिबियाँ भी मिली थीं जिसमें सोने चाँदी और रत्नों के मनके (माला के मनके) मिले थे।

गुंटुपल्ली गुफाओं की जैन धर्म से संबद्धता

इन गुफाओं से प्राप्त एक शिलालेख के अनुसार जैन सम्राट महामेघवाहन खारबेल के वंशज राजा श्रीपद ने इन गुफाओं का और गुफा में स्थित वृहद मंडप का निर्माण जैन मुनियों की प्रार्थना सभा हेतु कराया था।

इनमें एक शिलालेख ब्राह्मी लिपि में हैं और लगभग प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व या उससे पहले का है। इस शिलालेख के मिलने से पहले तक इन गुफाओं को प्राचीन बौद्ध गुफाओं के रूप में ही देखा जाता था, किन्तु इसके मिलने के बाद नया शोध प्रारम्भ हो गया है जिसके अनुसार इन गुफाओं के कम से कम ५०० या ६०० वर्ष तक जैन मुनियों के आश्रय स्थल के रूप में होने के प्रमाण मिले हैं। एक और बात जो इस स्थल को जैन स्थल सिद्ध करती है वह है 'पल्ली'। 'पल्ली' और 'गुंडू' नाम प्रत्यय वाले समस्त ग्राम किसी समय जैन बाहुल्य हुआ करते थे, ये इतिहासकार भी मानते है। श्रीलंकाई इतिहासकारों सीरी-सीता तथा खरेवास ने ये प्रमाणित किया है कि बुद्ध लामाओं के पहले ये जैन मुनियों का आश्रय स्थल हुआ करता था और यहाँ एक शैलकृत जिनालय भी बनाया गया था जो बाद में बौद्ध स्तूप से बदल दिया गया। यहाँ से बुद्ध की कोई प्रतिमा नहीं मिली है, जिससे भी इस बात को बल मिलता है कि ये गुफाएँ सदा ही किसी एक धर्म या संप्रदाय के हाथ में नहीं रही है। पत्थर का बना हुआ स्तूप निश्चित रूप से इसका प्रमाण है कि यह अपेक्षाकृत नवीन है और बाद में जोड़ा गया है।

वर्तमान स्थिति तथा कर्त्तव्य:

वर्तमान में ये बौद्ध गुफाओं के रूप में ही विख्यात हैं और स्थानीय इन गुफाओं को अब भी पांडव गुफाएँ ही मानते हैं। गुंटुपल्ली की गुफाएँ सर्वप्रथम जैन राजा द्वारा जैन मुनियों के आश्रय हेतु बनाई गयी थीं, ये तथ्य इतिहास में अब तक पढ़ाया नहीं जा सका है और न ही लोग इसे मानते हैं। हमारा कर्त्तव्य यही है कि सत्य जानकारी और तथ्य लोगों तक पहुँचे और जैन धर्म को और इसकी धरोहरों को उचित सम्मान प्राप्त हो।

मनीष जैन, उदयपुर (राजस्थान)

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, बाहुबली गिरि, मुम्ब्रा (बृहन्मुंबई)

मुंबई के प्रवेश द्वार पर 63 वर्ष प्राचीन, रमणीय तथा सुंदर दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र, बाहुबली गिरि, मुम्ब्रा है, जहाँ 28 फीट की गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान की अतिशयकारी खड्गासन प्रतिमा स्थापित है।

यह क्षेत्र ठाणे शहर से 8 कि.मी. की दूरी पर है एवं यह क्षेत्र १958 में लगभग १3 एकड़ की जगह पर फैला हुआ था जो आज कुछ असामाजिक तत्वों के कब्जे के कारण लगभग 8 एकड़ ही रह गया है। श्री १008 बाहुबली भगवान की 28 फुट ऊँची विशाल प्रतिमा आचार्य श्री १0 8 नेमीसागर महाराज जी की प्रेरणा से श्रावक श्रेष्ठी श्री भाईचंद रुपचंद दोशी परिवार के द्वारा सन् १963 में यहाँ लाई गई एवं सन् 1970 में विद्वान पंडित श्री नारेजी के सान्निध्य में प्राण प्रतिष्ठा की गई।

सन् १975 में प्रथम तथा उसके उपरांत १980 में, 1985 में एवं 2017 में महामस्तकाभिषेक संपन्न हुआ। श्री १008 पार्श्वनाथ भगवान मंदिर जी का जीर्णोद्धार एवं वेदी का निर्माण 2017 में हुआ। शुरुआत में इस ट्रस्ट का प्रबंधन श्रावक श्रेष्ठी श्री दोशी परिवार द्वारा किया जा रहा था लेकिन क्षेत्र के विकास एवं जीर्णोद्धार के लिए 1996 में क्षेत्र मुम्बई समाज को सौंपा गया।

यह क्षेत्र पिछले कई वर्षो से अविकसित और उपेक्षित है और इसका मुख्य कारण है यहाँ जैन समाज का अभाव। जैन परिवार न होने की वजह से दूसरे लोगों द्वारा क्षेत्र की भूमि हड़पी जा रही है तथा सरकारी संस्थाओं द्वारा अपेक्षित सहयोग न मिल पाने की वजह से यहाँ का ट्रस्ट आहत हुआ और ट्रस्ट कुछ कर न सका।

आज भी ट्रस्ट के पास लगभग 8 एकड़ का क्षेत्र है जिसे पुनर्जीवित एवं विकसित किया जा सकता है। ठाणे मुम्बई के सकल जैन समाज इस सुंदर क्षेत्र पर वर्ष में 2 बार धार्मिक कार्य आयोजित करते हैं और इस क्षेत्र के विकास में श्रमदान और आर्थिक सहयोग दे रहे हैं। आज भी जैन समाज अगर एक बार ठान ले तो मुम्ब्रा तीर्थक्षेत्र का नाम पूरे भारतवर्ष में हो सकता है और यह महाराष्ट्र का श्रवणबेलगोला बन सकता है।

यहाँ पर सिर्फ श्री 1008 बाहुबली भगवान का मंदिर ही नहीं बल्कि श्री १008 पार्श्वनाथ भगवान का भी चैत्यालय है। पिछले कुछ वर्षो से इस अति रमणीय क्षेत्र की उपेक्षा होने से यह मंदिर जीर्ण-क्षीर्ण हो चला है। अब इस क्षेत्र को जीर्णोद्धार एवं विकास की आवश्यकता है।

संत शिरोमणि आचार्य श्री १08 विद्यासागर महाराज जी के पावन आशीर्वाद से इस क्षेत्र का जीर्णोद्धार एवं विकास प्रगति पर है। इसी कड़ी में अगस्त 2019 में यहाँ हथकरघा प्रशिक्षण केंद्र प्रारम्भ हो चुका है एवं लगभग 4000 वर्ग फुट के हॉल का नवीनीकरण हो गया है, जिसमें लगभग 50 करघे (लूम) के साथ बाल ब्रह्मचारी भैयाजी द्वारा हथकरघा केंद्र का संचालन किया जायेगा।

आचार्य श्री जी के आशीर्वाद से शीघ्र ही इस क्षेत्र में चहारदीवारी (बाउंड्री) का निर्माण एवं क्षेत्र का जीर्णोद्धार व विकास होना है। इस विकास कार्य के लिए सकल जैन समाज का सहयोग आवश्यक है। मुम्बई के सभी क्षेत्र के जैन साधर्मी श्रावक हर माह में एक दिन निकालकर भी यहाँ दर्शन हेतु पधारते हैं तो इस क्षेत्र का विकास होना निश्चित है। मुम्बई शहर में यह क्षेत्र एक धर्म तथा प्रकृति का अनूठा संगम सिद्ध हो सकता है। सभी के सहयोग से इस क्षेत्र का समुचित जीर्णोद्धार एवं विकास होगा एवं यह अतिशय क्षेत्र मुम्बई का प्रमुख जैन तीर्थक्षेत्र बन जायेगा।

सभी ट्रस्टगण, कमेटी सदस्य एवं कार्यकर्ता तन-मन- धन से इस क्षेत्र के विकास में निरंतर कार्यरत हैं एवं समस्त भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज से इसके जीर्णोद्धार एवं विकास के लिए अधिक से अधिक सहायता की आशा रखते हैं और निम्न योजनाओं से सबको जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं-

शांतिधारा योजना :-

इस अतिशय क्षेत्र पर आचार्य श्री १08 विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से बसंत पंचमी १6 फरवरी 2020 से मंदिर जी में नित्य प्रतिदिन शांतिधारा की शुरुआत की गई, जिसकी सहयोग राशि इस प्रकार है :-

१) श्री १008 चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान के एक दिन का प्रथम जलाभिषेक एवं शांतिधारा - ११00/-

२) श्री १008 चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की एक दिन की शांतिधारा एवं पूजन - 2100/-

३) श्री १008 बाहुबली भगवान की खड़गासन प्रतिमा के चरणों पर मासिक शांतिधारा - 21,000/-

४) श्री 1008 बाहुबली भगवान की खड़गासन प्रतिमा के चरणों पर वार्षिक शांतिधारा - 1,51,000/-

कूपन योजना :-

इस अतिशय क्षेत्र के जीर्णोद्धार एवं विकास के लिए सम्पूर्ण क्षेत्र कि बाउंड्री वाल का निर्माण एवं क्षेत्र के जीर्णोद्धार के लिए अधिक से अधिक लोगों के धर्म लाभ के लिए कूपन योजना भी प्रारम्भ की है-

1) 5500/- प्रति वर्ग फुट,
2) 11,000/- प्रति दो वर्ग फुट,
3) 21,000/- प्रति चार वर्ग फुट

अयोध्या नगरी, इक्ष्वाकु वंश और आदि तीर्थंकर ऋषभदेव

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में एक है जिसका समर्थन सिंधु सभ्यता के पुरातात्विक साक्ष्यों और वैदिक साहित्य से होता है। भारत विश्व में आदिकाल से ही ज्ञान विज्ञान का केन्द्र था। यर्जुवेद में अपने देश की संस्कृति को विश्व की प्रथम संस्कृति (साः प्रथमः संस्कृति विश्ववारा 4-47½[1] कहा गया। ज्ञातव्य है कि जिसका प्रवर्तन भोग भूमि को कर्मभूमि के रूप में परिवर्तित कर तीर्थंकर ऋषभदेव ने अयोध्या में ही किया था।

जैसा भागवत पुराण *" अथ ह भगवानृषभ देवः स्ववर्ष कर्मक्षेत्र मनुमन्य मानः प्रदर्शित गुरूकुल वासो"* एवं हिन्दू महापुराण *"आषाढ मास बहुल प्रतिपद्दि बसे कृती। कृत्वा कृतयुगारम्भं प्रजापत्यमुपेयिवान्।"* के उल्लेखों से स्पष्ट होता है।

भविष्यद्रष्टा मानव के आदि जनक मनु महाराज ने ऋषभदेव को लक्षित कर यह लिखा होगा *"एतद् प्रस्तस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं स्वं चरित्रं शिवेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः"*

अर्थात् इस देश में एक अग्रजन्मा-आदिदेव ऋषभ होंगे-जो सारे संसार को चरित्र की शिक्षा प्रदान करेगें।

"ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता। स ब्रह्मविद्या सर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह।।"

मुण्डकोपनिषद 1.1

अर्थात् देवताओं में सर्वप्रथम ब्रह्मा उत्पन्न हुए। वे विश्व के कर्ताः असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प और विद्या के संप्रदाता थे, इसीलिए तीनों भुवनों के रक्षक थे। उन्होंने समस्त विद्याओं में प्रतिष्ठित ब्रह्मविद्या (अध्यात्म विद्या) अपने ज्येष्ठ पुत्र अर्थव-भरत (यहाँ अर्थव शब्द भरत के पर्याय के रूप में लिया है) के निमित्त कही।

जैन ग्रन्थों के अनुसार-ऋषभदेव ने अपने 100 पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र भरत को अर्थशास्त्र और न्यायशास्त्र, ऋषभसेन को संगीत, अनन्त विजय को चित्र, विश्वकर्मा को वास्तु एवं बाहुबली को कामशास्त्र और आर्युवेद का ज्ञान दिया। उन्होंने अपनी पुत्री ब्राम्ही को ब्राम्ही लिपि और सुन्दरी को अंक लिपि का अभ्यास कराया। इस प्रकार पुरुषों को 72 और स्त्रियों को 64 कलाओं का ज्ञान दिया।

पाषाण विज्ञान के मूर्धन्य विद्वान डॉ. एच.डी. साँकलिया के अनुसार यदि आधुनिक पुरातत्व मनुष्य के संस्कार के स्तरों का वर्णन करें तो नाभिराय या उनके पुत्र श्री ऋषभदेव का युग कृषि-काल कहलाएगा जो कि पाषाणयुग के बाद आता है और सम्भवतः इसीलिए ऋषभदेव प्रथम उपदेष्टा कहे जाते हैं, जिन्होंने मनुष्य को सभ्य बनाया। इसका समर्थन श्री के.बी. फिरोदिया, भू. पू. अध्यक्ष विधानसभा, बम्बई ने भी किया है भगवान ऋषभदेव मानवता के पहले नियन्ता थे। जिन्होंने भौतिक संसार में संस्कृति और सभ्यता के बीजों को बोया था। संसार उनके प्रति चिरऋणी है।

सुप्रसिद्ध गांधीवादी चिन्तक काका साहेब कालेलकर का यह निष्कर्ष नितान्त ही उचित है-"हिन्दू समाज को संस्कारी और सभ्य बनाने में ऋषभदेव का बड़ा भारी योगदान था। कहा जाता है कि विवाह-व्यवस्था, पाकशास्त्र, गणित, लेखन आदि संस्कृति के बीज ऋषभदेव ने समाज में बोये। अगर यूँ कहें तो भी चलेगा कि यह सब करके और अन्त में उसका त्याग करके ऋषभदेव ने प्रवृति और निवृति दोनों मार्गों का आचरण करके दिखाया।

ऋग्वेद में ऋषभ का उल्लेख एक क्षत्रिय राजा के रूप में मिलता है और साथ ही अर्हन्त संज्ञा भी प्राप्त होती है। यजुर्वेद में ऊँ नामो अर्हतो ऋषभो, अथर्ववेद में अहिंसक वृतियों के प्रथम राजा आदि रूपों में उल्लेख किया गया है। इसी प्रकार ताण्ड्य ब्राम्हण-ऋषभो वा पशूनामधिपति। (१४/२/५) शतपथ ब्राम्हण-ऋषभा वा पशूनां प्रजापति। (२/२५/१७) में ऋषभ को पशुपति कहा गया है।

महाभारत के शान्तिपर्व में महायोगी, अर्हत कहा है। *ऋषभादि महायोगी नामाचारे। इष्टाय अर्हतारयों मोहिता।*

हनुमान नाटक से भी यही सिद्ध है-*'अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः।* सन्त विनोबा भावे जी का कहना है वेद वचनों में "अर्हन इदं विश्वसंभवस" आदि वचन पाये जाते हैं। अर्हन् शब्द जैन धर्म के अधिनायक भगवान ऋषभदेव को ही सूचित करता है। इसी प्रकार पौराणिक साहित्य में लिंगपुराण (४७/२०-२३), ब्रम्हाण्डपुराण (१/२/१४), शिवपुराण (३७/५७) एवं विष्णुपुराण (२/१/२७-

चौथी सदी ई०पू० जिन केवली प्रतिमा

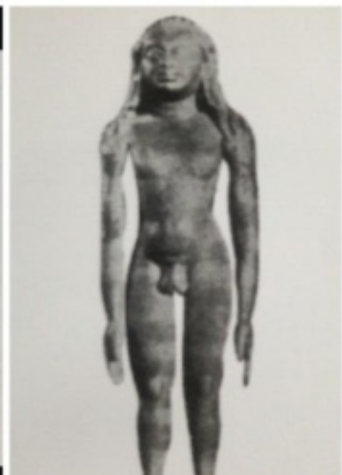
ऋषभ (केसी)

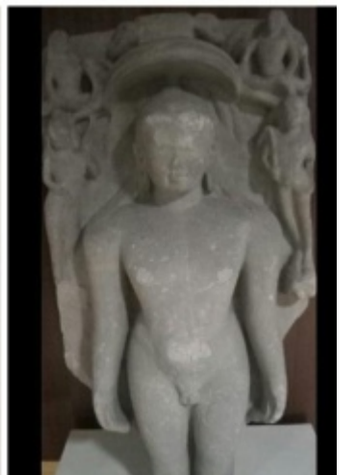
ऋषभदेव बारहवीं सदी

दूसरी सदी ई०पू० के वृषभ चिन्ह के सिक्के

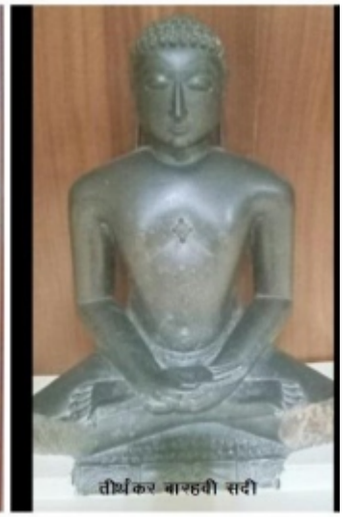
तीर्थंकर बारहवीं सदी

२८) में चक्रवर्ती भरत (जिनके नाम पर यह देश अजनाभवर्ष से भारतवर्ष हुआ) के पिता के रूप में भी ऋषभदेव का उल्लेख मिलता है। भागवतपुराण पंचम स्कन्ध से भी इसका समर्थन होता है।

ए.एस.आई. के पूर्व महानिदेशक डॉ. मुनीश चन्द्र जोशी ने (ऋषभ सौरभ, ९२, पृ. ६४) अपने लेख में लिखा है कि भारतीय परम्पराओं के अनुसार ऋषभनाथ एक प्रारम्भिक राजवंश में उदभूत युगपुरूष थे, उनका सम्बन्ध अयोध्या नामक नगर से था। अर्थववेद में हिरण्यमय कोश से आवृत्त देवताओं की नगरी अयोध्या की महिमा वर्णित है। जैन परम्परानुसार ऋषभदेव जब माता के गर्भ में आये तब हिरण्य की वर्षा हुई थी और उसी समय अयोध्या हिरण्यमय कोष से आवृत्त हो गयी। गरुण पुराण में सात मोक्षदायनी पुरियों में प्रथम माना है। रामायण में उल्लेख है कि बहुत वर्षों से जनशून्य (सूनी पड़ी) रमणीक अयोध्या नगरी राजा ऋषभ के समय बसी। ("अयोध्या ापि पुरी रम्या शुन्या वर्षगणान् बहून। ऋषभं प्राप्य राजानं निवासमुपयास्यति।") इस नगरी का निमार्ण स्वंय मनु ने कराया था। जैन परम्परा में भी अयोध्या आदि तीर्थ कहा गया है एवं इसका निर्माण नाभिराय ने कराया था। आचार्य यति वृषभ ने तिलोयपण्णत्ति में 'जादो हु अवज्झाए उसहों' आदि गाथाओं द्वारा सूचित किया है कि अयोध्या नगरी में ऋषभदेव का जन्म हुआ था। अजितनाथ, अभिनन्दनाथ, सुमितनाथ और अनन्तनाथ जिनेश्वरादि पाँच तीर्थंकरों का आविर्भाव अयोध्या में ही हुआ था।

जैन मान्यता के अनुसार अयोध्या एक शाश्वत तीर्थ है। अंतिम कुलकर (जिन्हें वैदिक परंपरा में मनु कहा जाता है) नाभिराय अपनी संगिनी मरूदेवी के साथ यहीं निवास करते थे। और यहीं उनके पुत्र आदितीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म हुआ था जिनके अपर नाम आदिदेव, आदिनाथ, आदिपुरुष, स्वयभू, प्रजापति, पुरूदेव कश्यक और इक्ष्वाकु थे। मनु पुत्र ऋषभदेव, इक्ष्वाकु ही इस नगर के प्रथम नरेश थे, और इसी नगर में उन्होंने मानवों को लोक धर्म एवं आत्म धर्म का सर्वप्रथम उपदेश दिया, इनके उपरान्त हुए अन्य २३ तीर्थकरों में से २२ उन्हीं के इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए थे, जिनमें दूसरे अजितनाथ, चौथे अभिनन्दननाथ, पाँचवें सुमतिनाथ और चौदवें अनन्तनाथ का जन्म भी अयोध्या में ही हुआ था। इस प्रकार अयोध्या पाँच तीर्थकरों की जन्मभूमि है।

भगवान ऋषभदेव के निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में भरत चक्रवर्ती ने अयोध्या में एक उत्तुंग सिंह-निषद्या निर्माण कराई थी, तथा नगर के चारों महाद्वारों पर 24 तीर्थंकरों की निज-निज शरीर प्रमाण प्रतिमाएँ स्थापित कीं तथा स्तूप एवं मूर्ति कला का विकास भी इस नगर में सर्वप्रथम विकसित हुआ। भरत के उपरान्त सुभौम, सगर, मघवा आदि कई अन्य चक्रवर्ती सम्राट भी अयोध्या में हुए और महाराज रामचन्द्र एंव लक्ष्मण जैसे शलाकापुरूषों को जन्म देने का श्रेय भी अयोध्या को ही है। रामचन्द्र दीक्षा लेने के बाद पद्ममुनि के नाम से प्रसिद्ध हुए और अर्हत् परमेश्वर बनकर मोक्ष गये। महारानी सीता की गणना जैन परम्परा की सोलह आदर्श महासतियों में होती है। यज्ञों में पशुबलि के प्रश्न को लेकर नारद और पर्वत के बीच राजा वसु की राजसभा में होने वाला विवाद भी एक अनुश्रुति के अनुसार अयोध्या में ही हुआ था। राजनृतिका की बुद्धिषेणा और प्रीतंकर एवं विचित्रमति नामक मुनियों की

कथा का तथा अन्य अनेक जैन पुराण-कथाओं का घटनास्थल यह नगर रहा। अन्तिम तीर्थंकर महावीर अपने एक पूर्व भव में तथा तीर्थकर महावीर के रूप में भी अयोध्या पधारे थे, यहाँ के सुभूमिभाग उद्यान में उन्होंने मुमुक्षुओं को धर्मामृत पान कराया तथा कोटिवर्ष के राजा चिलाति को जिनदीक्षा दी थी। उनके नवम् गणधर अचलभव का जन्म भी अयोध्या में ही हुआ था।

भगवान महावीर के निर्वाण के लगभग एक सौ वर्ष पश्चात मगध नरेश नन्दिवर्धन ने इस नगर में मणिपर्वत नामक उतंग जैन स्तूप बनवाया था, जिसकी स्थिति वर्तमान मणिपर्वत टीला सूचित करता था। मौर्य सम्राट सम्प्रति और वीर विक्रमादित्य ने इस क्षेत्र के पुराने जिन मंदिरों का जीर्णोद्धार एवं नवीन जिनालयों का निर्माण कराया था। गुजरात नरेश कुमारपाल चौलुक्य (सोलंकी) ने भी यहां जिन मंदिर बनवाये थे ऐसा बताया जाता है। ग्यारहवीं शती में यहाँ जैन धर्मावलंबी श्रीवास्तव्य कायस्थ राजाओं का शासन था, जिन्होंने सैयद सालार मसउद गाजी को, जो अवध प्रान्त पर आक्रमण करने वाला संभवतः सर्व प्रथम मुसलमान था, वीरता पूर्वक लड़कर खदेड़ भगाया था। सन् 1194 ई. के लगभग दिल्ली विजेता मुहम्मद गोरी के भाई मखदमूशाह जूरन गोरी न अयोध्या पर आक्रमण किया और ऋषभदेव जन्मस्थान के विशाल जिनमंदिर को ध्वस्त करके उसके स्थान पर मस्जिद बना दी, किन्तु स्वयं भी युद्ध में मारा गया और उसी स्थान पर दफनाया गया जो अब शाहजूरन का टीला कहलाता है। उसी टीले पर, मस्जिद के पीछे की ओर, आदिनाथ का एक छोटा सा जिनमंदिर तो थोड़े समय पश्चात ही पुनः बन गया किन्तु चिरकाल से उसका चढ़ावा अयोध्या के बकसरिया टोले में रहने वाले शाहजूरन के वंशज ही लेते आ रहे हैं।

ऐसी भी किंवदन्ति जनश्रुत होती है कि अवध के बादशाह नसिरूद्दीन हैदर के समय में मणिपर्वत से नंदयुग का एक शिलालेख प्राप्त हुआ था, जो अब अप्राप्त है। मणिपर्वत की दक्षिण दिशा में स्थित एक कृषिक्षेत्र (खेत) से अयोध्या के शुंगकालीन प्रथम शती ई.पू. के राजा धनदेव का संस्कृत शिलालेख भी मिला है। सम्भवतः एतद्विषयक एक अभिलेख अयोध्या के रामकथा-संग्रहालय या डॉ. रा.म.लो. अवध वि.वि. फैजाबाद में सुरक्षित है। सन् 1865 में अयोध्या के सन्ननिकट प्राचीन सिक्कों का एक दफीना मिला था, जिसमें तीन प्रकार के प्राचीन सिक्के थे, जो स्थानीय नरेशों के प्रतीत होते हैं। दूसरी पहली ई.पू. के सिक्कों में एक ओर वृषभ या हस्ती, दूसरी तरफ चैत्यवृक्ष, स्वस्तिक, नन्द्यावर्तादि आदि जैन चिन्ह हैं। तीसरी कोटी के सिक्के दूसरी-चौथी सती के स्थानीय मित्र वंशी राजाओं के प्रतीत होते हैं। ये भी वृषभ, नन्दिपादादि प्रतीकों से समलंकृत थे। मध्यकाल के प्रायः दसवीं सदी से लेकर 19वीं सदी के कई जैन प्रतिमा-लेख, शिलालेख भी उपलब्ध हुए थे। चौथी-पाँचवीं सदी ई.पू. नन्दों के बाद अयोध्या इक्ष्वाकुवंशी चन्द्रगुप्त मौर्य के अधिकार में थी। उसी काल के वहाँ हनुमानगढ़ी के पास खुले क्षेत्र के खुदाई में प्राप्त चौथी शती ईसा पूर्व की जिन केवलिन की मूर्ति (भारत में प्राप्त प्राचीनतम जिन प्रतिमा) एवं सिक्कों (2 सदी ई.पू.) पर वृषभ, हाथी के चिन्ह और राजाओं के नाम में (धनदेव, विशाखदेव) देव शब्द का प्रयोग और वृषभ राज चिन्ह (जो सत्ता परिवर्तन पर भी नहीं बदलता था) ऋषभदेव की ऐतिहासिकता का समर्थन करते हैं।

सन् १३३० ई. के लगभग जैनाचार्य जिनप्रभसूरि ने दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक से फरमान प्राप्त करके संघ सहित अयोध्या तीर्थ की यात्रा की थी। उन्होंने अपने विविध तीर्थकल्प के अन्तर्गत अयोध्यापुरीकल्प में लिखा है कि उस समय वहाँ जन्म लेने वाले पांचों तीर्थकरों के मंदिरों के अतिरिक्त, राजा नाभिराय (ऋषभदेव के पिता) का मंदिर, पार्श्वनाथ की बाड़ी, चक्रेश्वरी (ऋषभदेव की यक्षि) की रत्नमयी प्रतिमा, इसके संगी गोमुख यक्ष की मूर्ति, सीताकुंड, सहस्त्रधारा, स्वर्गद्वार आदि जैन धर्मायतन विद्यमान थे, तथा नगर के प्राकार पर मत्तंगयंद यक्ष का निवास था, जिसके आगे उस समय भी हाथी नहीं आते थे, जो आते भी थे वे तत्काल-मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे।

१५२८ ई. में मुगल बादशाह बाबर ने अयोध्या पर आक्रमण किया और अपने सिपहसालार मीर बाकी के द्वारा रामकोट में स्थित राम जन्मस्थान के मंदिर को तोड़ कर मस्जिद बनाई और उपर्युक्त जैन मंदिरों में से भी कुछ को तुड़वाया। अकबर व जहाँगीर के शासनकाल में उनकी तटस्थता के कारण या मौन स्वीकृत के चलते जैन एवं वैष्णव मठ एवं मन्दिर निर्मित होने लगे, आगे औंरगजेब ने उन्हें भी तुड़वा दिया। अतैव अधिकाश वैष्णव और जैन परम्परा के मठ एवं मन्दिर अवध के नवाबों और ब्रिटिश शासनकाल में बने हैं। नगर के मुहल्ला कटरा में एक टोंक में एक जैन महात्मा के चरण चिन्ह स्थापित हैं, जिन पर अंकित लेख से विदित होना है कि वहाँ शीतल नाम के दिगम्बर जैन मुनिराज ने समाधिमरण किया था, जिसकी स्मृति में ब्रह्मचारी मानसिंह के पुत्र ने बैशाख सुदी ८ सोमवार, संवत् १७०४ के उक्त चरण चिन्हों को प्रतिष्ठापित किया था।

सन् १९६५ में आर्चार्यरत्न देशभूषण जी महाराज ने रानी का बाग रायगंज मोहल्ले में ३१ फुट ऊँची खड्गासन मनोज्ञ प्रतिमा एक बड़े मन्दिर में स्थापित करायी थी। वर्तमान में गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माता जी ने शाश्वत तीर्थ अयोध्या में सन् १९९३ से १९९५ के मध्य बड़ी मूर्ति रायगंज के नाम से विख्यात उपर्युक्त जैन मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया एवं इसी मन्दिर परिसर में 'समवशरण मन्दिर' और 'त्रिकाल चौबीसी मन्दिर' का निर्माण करवाकर इस तीर्थ का विश्वव्यापी प्रचार किया। १९९५ में उत्तर प्रदेश शासन के सहयोग से ऋषभदेव राजकीय उद्यान में २१ फुट पद्मासन की प्रतीमा का निर्माण कराया गया। इसी क्रम में २०१९ में आर्यिका ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा एवं आर्यिका चन्दनामती माता जी के कुशल मार्गदर्शन में श्री रवीन्द्रकीर्ति जी ने अयोध्या में पाँच तीर्थकर भगवन्तों-भगवान् आदिनाथ, अजितनाथ, अभिनन्दन नाथ, सुमतिनाथ एवं अनन्तनाथ की जन्म कल्याणक भूमियों पर बने अत्यन्त प्राचीन जिन मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया गया एवं उनकी अभूतपूर्व पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराई।

शैलेन्द्र कुमार जैन,
अध्यक्ष-श्री आदिनाथ मेमोरियल ट्रस्ट लखनऊ

भगवान ऋषभदेव ने मानव जाति को स्वावलम्बन की कला सिखाई

डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'

जैन परम्परा में मान्य चौबीस तीर्थंकरों की शृंखला में भगवान ऋषभदेव का नाम प्रथम स्थान पर है और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं। वेद जो विश्व के प्राचीनतम लिपिबद्ध धर्म ग्रंथों में से एक है, में तथा श्रीमद्भागवत इत्यादि में भगवान ऋषभदेव का उल्लेख अलग अलग नामों से है। किसी न किसी रूप में विश्व की लगभग समस्त संस्कृतियों में ऋषभदेव की उपस्थिति उनकी सर्वमान्य स्थिति और जैनधर्म की प्राचीनता को व्यक्त करती है। भगवान ऋषभदेव भारतीय संस्कृति के उन्नायक ही नहीं बल्कि विश्व मानव विकास की प्रथम कड़ी के रूप प्रतिष्ठित करते हैं। भगवान ऋषभदेव ने मानव जाति को स्वाबलम्बन की कला सिखाई, पुरुषार्थ का उपदेश दिया।

जैन मान्यतानुसार भगवान ऋषभदेव ने ही असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प इन षट क्रियाओं की शिक्षा दी।

1. असि - असि का अर्थ तलवार है। जो देश की रक्षा के लिए तलवार लेकर देश की सीमा पर खड़े रहकर देश की रक्षा करते हैं, ऐसे सैनिक एवं नगर की रक्षा के लिए भी सिपाही एवं गोरखा आदि रहते हैं।
2. मसि - मसि अर्थात् स्याही। स्याही-कलम से लेखा-जोखा रखने वाले, मुनीमी करने वाले, अमानत रखना-देना आदि।
3. कृषि - जीव हिंसा का ध्यान रखते हुए खेती करना अर्थात् अहिंसक खेती करना, अनाज उपजाना एवं पशुपालन करना।
4. विद्या - बहतर कलाओं को करना अथवा शैक्षणिक कार्य करना।
5. शिल्प - सुनार, कुम्हार, चित्रकार, कारीगर, दर्जी, नाई, रसोइया, मूर्तिकार, मकान, मन्दिर बनाना, नक्शे बनाना अदि।
6. वाणिज्य - सात्विक और अहिंसक व्यापार, उद्योग करना।

इन शिक्षाओं के अतिरिक्त सम्राट ऋषभदेव ने प्रजा का पालन करने के लिए सबसे पहले वर्ण व्यवस्था की, फिर उनकी आजीविका के नियम बनाये, जिससे प्रजा अपनी-अपनी मर्यादा का उल्लंघन न कर सके। आदिब्रह्मा ने अपनी दोनों भुजाओं में शस्त्र धारण कर क्षत्रियों की सृष्टि की थी अर्थात् उन्हें शस्त्र विद्या का उपदेश दिया था, क्योंकि जो हाथों में तलवार आदि लेकर सबल शत्रुओं के प्रहार से निर्बलों की रक्षा करते हैं वे ही क्षत्रिय कहलाते हैं। तदनन्तर प्रभु ने अपने ऊरुओं से यात्रा दिखलाकर अर्थात् परदेश आकर धन कमाना व्यापार करना सिखलाकर वैश्यों की रचना की, व्यापार करना ही उनकी मुख्य आजीविका है। बुद्धिमान् ऋषभदेव ने दैन्यवृत्ति में तत्पर रहने वाले शूद्रों की रचना की, अन्य वर्णों की सेवा-शुश्रूषा आदि करना ही उनकी आजीविका है। और अंत ब्राह्मण वर्ण की रचना भरत चक्रवर्ती द्वारा की गई।

इसी प्रकार ऋषभदेव ने प्रजा के योग (नवीन वस्तु की प्राप्ति) और क्षेम (प्राप्त वस्तु की रक्षा) की रक्षा के लिए 'हा, मा, और धिक्' इन तीन दण्डों की व्यवस्था कर दी। दुष्ट पुरुषों का निग्रह करना और सज्जन पुरुषों का पालन करना यह व्यवस्था भोगभूमि में नहीं थी क्योंकि उस समय पुरुष निरपराधी होते थे और अब कर्मभूमि में अपराध शुरू हो जाने से दण्ड व्यवस्था की आवश्यकता हो गई थी।

अब प्रश्न उठता है कि भगवान ऋषभदेव को वर्ण व्यवस्था और षट क्रियाओं की शिक्षा क्यों देना पड़ी, इससे पहले क्या व्यवस्था थी

जैन मान्यतानुसार उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल के छह छह भेद हैं। वर्तमान में अवसर्पिणी के छह कालों में पंचम काल चल रहा है। छह कालों में से प्रथम, द्वितीय और तृतीय काल में क्रम से उत्तम, मध्यम और जघन्य भोगभूमि की व्यवस्था रहती है। भोगभूमि में 10 प्रकार के कल्पवृक्ष होते हैं, इन्हीं कल्पवृक्षों से मानव को अपने दैनंदिन भोग-उपभोग की सामग्री प्राप्त होती है, जिस कारण से आपसी कलह, लूटपाट, ऊँच-नीच आदि के अवसर ही नहीं रहते थे। तृतीय काल के अन्त में ये कल्पवृक्ष नष्ट होने लगते हैं तब प्रजा अपने सम्राट से आजीविका के साधन पूछती है और ऋषभदेव वर्ण व्यवस्था और षट क्रियाओं की शिक्षा देते हैं।

अयोध्या नगरी में जन्मे ऋषभदेव राजा नाभिराय के पुत्र थे, इनका विवाह यशस्वती और सुनन्दा नामकी दो कन्याओं से होता है। पिता नाभिराय ने ऋषभदेव का राज्याभिषेक कर संन्यास धारण कर लिया। ऋषभदेव के दो पुत्र भरत और बाहुबली के साथ 98 अन्य पुत्र और दो पुत्रियाँ ब्राह्मी और सुन्दरी हुई जिन्हें उनके द्वारा अथाह ज्ञान दिया गया। ब्राह्मी को लिपि विद्या दी, जो आज भी ब्राह्मी लिपि नाम से ख्यात है और सुंदरी को अंकविद्या प्रदान की जो सभी लिपियों-भाषाओं में प्रयुक्त होती है। ऋषभदेव ने गृहस्थ में रहकर समस्त ज्ञान दिया और जनमानस को स्वावलम्बन युक्त जीवन जीने की कला सिखाई। मानव के मन में भ्रातृभाव की ज्योति जगाई और अन्त में अपने बड़े बेटे चक्रवर्ती भरत को राज्य देकर संन्यास धारण किया और अनेक मानव भी गृह त्याग कर इनके साथ ऋषि बन गये। जो ऋषभ से ऋषि परम्परा का आरम्भ हुआ और संन्यास धारण करने से शरीर से शिव हो गये। भरत के नाम से इस देश का नामकरण 'भारतवर्ष' इन्हीं की प्रसिद्धि के कारण हुआ।

इस प्रकार तीर्थंकर ऋषभदेव मानव जाति को पुरुषार्थ का उपदेश दिया, उन्होंने पर्यावरण सन्तुलन, महिला शिक्षा तथा स्त्री समानता का संदेश दिया। भगवान ऋषभदेव की शिक्षाएँ मानवता के कल्याण के लिए हैं, उनके उपदेश आज भी समाज के विघटन, शोषण, साम्प्रदायिक विद्वेष एवं पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में सक्षम एवं प्रासंगिक हैं।

अयोध्या के दार्शनिक राजा ऋषभदेव

प्रो.डॉ अनेकांत कुमार जैन

देश में ऐसे दार्शनिक राजाओं की लंबी परम्परा रही है, जिन्होंने राजपाट के बाद दीक्षा ली और आत्मकल्याण किया परंतु ऐसा विराट व्यक्तित्व दुर्लभ रहा है जो एक से अधिक परम्पराओं में समान रूप से मान्य व पूज्य रहा हो।अयोध्या में जन्मे प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव उन दुर्लभ महापुरुषों में से एक हुए हैं।

वैदिक परंपरा के भागवत पुराण में उन्हें विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक माना गया है। वे आग्नीघ्र राजा नाभि के पुत्र थे। माता का नाम मरुदेवी था। दोनों परम्पराएँ उन्हें इक्ष्वाकुवंशी और कोसलराज मानती हैं। ऋषभदेव को जन्म से ही विलक्षण सामुद्रिक चिह्न थे। शैशवकाल से ही वे योग विद्या में प्रवीण होने लगे थे। ***जैन पुराणों के साथ साथ ही वैदिक पुराणों के अनुसार भी ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर देश का नाम भारत पड़ा***। उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि जैन परम्परा में भगवान ऋषभदेव की दार्शनिक, सांसारिक कर्मण्यशीलता पर अधिक जोर है जबकि भागवत परम्परा में उनकी दिगम्बरता पर अधिक बल दिया गया है। अयोध्या में खुदाई के दौरान ऋषभदेव तथा अन्य तीर्थंकरों की अनेक प्रतिमाएँ तथा प्राचीन जैन मंदिरों के अनेक पुरातात्विक प्रमाण मिले हैं।वर्तमान में अजमेर में स्थित सोनी जी की नसिया में सोने की अयोध्या नगरी की स्वर्ण रचना पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है, जिसका निर्माण आज से लगभग ३०० वर्ष पूर्व शास्त्र में वर्णित अयोध्या नगरी के वर्णन के अनुसार हुआ था । भगवान ऋषभदेव का समग्र परिचय पाने के लिये परम्पराओं का समुचित अध्ययन करना आवश्यक है।

जैन परम्परा में कुलवरों की एक नामावली है, जिनमें ऋषभदेव १५वें और उनके पुत्र १६वें कुलकर हैं। कुलकर वे विशिष्ट पुरुष होते हैं, जिन्होंने सभ्यता के विकास में विशेष योगदान दिया हो। जैसे तीसरे कुलकर क्षेमंकर ने पशुओं का पालन करना सिखाया तो पाँचवें सीमन्धर ने सम्पत्ति की अवधारणा दी और उसकी व्यवस्था करना सिखाया। ग्यारहवें चन्द्राभ ने कुटुम्ब की परम्परा डाली और १५वें कुलकर ऋषभदेव ने अनेक प्रकार का योगदान समाज को दिया।

चैत्र कृष्ण नवमीं को जन्मे भगवान ऋषभदेव जैन धर्म के पहले तीर्थंकर के रूप में प्रसिद्ध हैं। अयोध्या के महाराज नाभिराय व उनकी पत्नी महारानी मरूदेवी को प्रभु के माता-पिता होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनका वर्ण सुवर्ण और चिह्न वृषभ है। युवावस्था में ऋषभदेव का विवाह सुमंगला व सुनन्दा नामक कन्याओं से हुआ। कालक्रम से प्रभु ऋषभदेव के १०१ पुत्र और पुत्री हुए। भरत इनके ज्येष्ठ पुत्र थे, जो उनके राज्य के उत्तराधिकारी तो हुए ही, प्रथम सम्राट भी थे और जिनके नाम पर हमारे राष्ट्र का नाम 'भारत' पड़ा।

युद्धकला, लेखनकला, कृषि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या आदि के माध्यम से समाज के जीवन विकास में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। जो लोग हमारे भारत में लेखन कला का प्रारम्भ बहुत बाद में होना मानते हैं उन्हें ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहिए। भारत में स्त्री शिक्षा की शुरुआत करने का श्रेय भी ऋषभदेव को ही जाता है यही कारण है कि उनकी पुत्री ब्राह्मी के नाम पर ही भारत की प्राचीनतम लिपि का नाम भी ब्राह्मीलिपि पड़ा।

यहाँ एक नज़र में उनके सम्पूर्ण पौराणिक परिचय को हम संक्षेप में देखना रुचिकर होगा -

नाम –ऋषभदेव ,
जन्मभूमि - अयोध्या (उत्तर प्रदेश),
पिता - महाराज नाभिराय,
माता - महारानी मरुदेवी,
वर्ण – क्षत्रिय,
वंश – इक्ष्वाकु, देहवर्ण - तप्त स्वर्ण सदृश,
चिन्ह – बैल, आयु - चौरासी लाख पूर्व वर्ष,
अवगाहना - दो हजार हाथ, गर्भ - आषाढ़ कृ.२,
जन्म - चैत्र कृ.९, तप - चैत्र कृ.९,
दीक्षा-केवलज्ञान वन एवं वृक्ष - प्रयाग-सिद्धार्थवन, वट वृक्ष (अक्षयवट),
प्रथम आहार - हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस द्वारा (इक्षुरस),
केवलज्ञान - फाल्गुन कृ.११,
मोक्ष - माघ कृ.१४,
मोक्षस्थल - कैलाश पर्वत,
समवसरण में गणधर - श्री वृषभसेन आदि ८४,
समवसरण में मुनि - चौरासी हजार,
समवसरण में गणिनी - आर्यिका ब्राह्मी,
समवसरण में आर्यिका - तीन लाख पचास हजार,
समवसरण में श्रावक - तीन लाख,
समवसरण में श्राविका - पांच लाख,
जिनशासन यक्ष - गोमुख देव,
जिनशासन यक्षी - चक्रेश्वरी देवी,

महापुराण में भगवान ऋषभदेव के 'दशावतार' नाम भी प्रसिद्ध हैं-१. विद्याधर राजा महाबल२. ललितांग देव३. राजा वज्रजंघ४. भोगभूमिज आर्य ५.श्रीधर देव ६. राजा सुविधि ७. अच्युतेन्द्र ८. वज्रनाभि चक्रवर्ती ९. सर्वार्थसिद्धि के अहमिन्द्र १०. भगवान ऋषभदेव।इन्हें वृषभदेव, आदिनाथ, पुरुदेव और आदिब्रह्मा भी कहते हैं।

अयोध्या के इन्हीं दार्शनिक राजा भगवान् ऋषभदेव ने जिनका काल श्रीराम के भी पूर्व का है ,ने प्रजा को कृषि करो और ऋषि बनो का मन्त्र दिया था ।उन्होंने सामाजिक व्यवस्था का सूत्रपात भी किया और भारत की जनता को संसार से ऊपर उठकर जीने की अध्यात्म कला भी सिखाई ।उन्होंने सर्वप्रथम योग साधना करके योग विद्या का सूत्रपात भी किया ।मोहनजोदड़ो हड़प्पा में जिन योगी की कायोत्सर्ग मुद्रा में सबसे प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई है वे ऋषभदेव ही हैं।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर प्रासंगिक लेख

काम विजेता भगवंत महावीर

- श्रमण 108 सुप्रभसागर जी महाराज

संसार को बढ़ाने वाला, संसार की वृद्धि का यदि कोई कार्य है तो वह है विषय वासनाओं का उद्रेक, कषायों का उद्रेक। वे कषायें, विषय वासनाएँ अत्यंत दुर्जेय हैं और जिसने उन कषायों को, विषयवासनाओं के उद्रेक को जीत लिया वही सबसे बड़ा विजेता है, वही कामजयी है, वही कालजयी है। काम ने तीनों लोकों को अपने वश में कर लिया है और काम के वश हुआ जीव संसार में अनेकानेक प्रकार के दुःखों को प्राप्त करता रहता है लेकिन जिस जीव ने उस काम के उद्रेक को, विषयवासनाओं के उद्रेक को, कषायों के उद्रेक को जीत लिया वही शाश्वत सुख को प्राप्त कर सकता है।

संसार में ऐसे अनेकानेक पुण्य पुरुष हुए जिन्होंने अपने जीवनकाल में उन विषय-कषायों के उद्रेक को जीतकर अनंत काल तक के लिए अनंत सुख में लवलीन हुए हैं। जीवन के अंतिम समय में ऐसे भी सुभट हुए जिन्होंने कषायों पर विजय प्राप्त कर ली।

तीर्थंकर भगवंतों का ऐसा नियोग हुआ कि वे अपने जीवनकाल में सभी राजसी वैभव, सुख-सुविधाओं को भोगकर अंत समय उसका त्याग करके उस काम सुभट पर विजय प्राप्त करते हैं, अंत समय में कषायों के उद्रेक पर विजय पाना कुछ आसान भी है क्योंकि युवावस्था में काम का उद्रेक अत्यंत दुर्जेय होता है। तीर्थंकर महावीर स्वामी एक ऐसे सुभट हुए जिन्होंने अपनी युवावस्था में ही उस त्रिकाल जयी काम रूपी सुभट को परास्त कर दिया। संसार में अनेक प्रकार के योद्धा होते हैं जो अनेक प्रकार से शत्रुओं को जीत लेते हैं। जैसे लक्षभट, कोटिभट आदि। लेकिन वे कामरूपी सुभट से हार जाते हैं। बाहर के शत्रुओं को जीतना बहुत आसान है परंतु अंतरंग में विषय-कषाय रूप शत्रु से हार जाते हैं।

काम के उद्रेक को, विषय-वासनाओं के उद्रेक को वही जीत सकता है जिसका मनोबल अत्यंत दृढ है, जिसका आत्मबल मजबूत है, जिसकी संकल्पशक्ति अत्यंत दृढ है, क्योंकि दुर्घटनाएं प्रायः उसी के जीवन में घटती हैं जो आत्मबल से हीन होता है। जीवन की अवस्था चाहे पचपन की हो या चाहे बचपन की, दुर्घटना कभी भी घट सकती है। दुर्घटना कभी भी बचपन या पचपन से नहीं घटती अपितु बचपने से घटती है। तीर्थंकर महावीर स्वामी के जीवन में बचपन , युवावस्था तो थी लेकिन उनके जीवन में बचपना नहीं था। इसीलिए तो हमें भी अपने जीवन को बचपन, पचपन से नहीं अपितु बचपने से बचाने की आवश्यकता है। अरे! एक घटना ऐसी जीवन में घट जाय कि फिर घट ग ना घट अर्थात् शरीर ही न बचे जैसी कि घटना महावीर स्वामी के जीवन में घटित हुई।.

युवराज वर्द्धमान की आयु उस समय लगभग तीस वर्ष की होने वाली थी कि एक दिन कुमार वर्द्धमान क्या देखते हैं कि आज महल को अच्छी तरह से सजाया जा रहा है, बहुत सारे अतिथि भी आये हुए हैं। कुमार वर्द्धमान अपनी मां त्रिशला से पूछते हैं कि हे मां! ये महल क्यों सजाया गया , ये अतिथिगण क्यों आये हुए हैं , मां कहती हैं बेटा! मुझे नहीं पता, अपने पिताजी से पूछो, वे पिताजी के पास पहुंचते हैं, पिताजी कहते हैं, अपनी मां से पूछो और नियोग ऐसा बना कि एक समय मां और पिताजी दोनों एक साथ, एक स्थान पर मिल गये। अब महावीर स्वामी कहने लगे, आप लोग सच-सच बताओ ये सब क्या चल रहा है। अब क्या करते माता-पिता, मां को बताना पड़ा। बेटा तुम्हारे सगाई की तैयारी चल रही है, युवराज सन्मति कहने लगे नहीं मां! मेरी मति, सन्मति हो चुकी है और मेरी सगाई तो पहले ही हो चुकी है, बस! मुझे उस कन्या को वरण करने की देरी है, माता-पिता कहते हैं कि बेटा हमें भी तो बताओ वह कन्या कौन है, कुमार कहते हैं पिताजी! वह कन्या कोई संसार की कन्या नहीं अपितु मेरी सगाई तो मुक्ति कन्या से पहले से ही तय हो चुकी है, क्या आपको पता नहीं कि मैं तो तीर्थंकर प्रकृति का बंध साथ लेकर आया हूं, मुझे तो मुक्तिरमा का वरण करना है इसलिए मैं दीक्षा लेना चाहता हूं। मां कहती है कि बेटा हमें पता है कि तुम्हारे दो कल्याणक भी हो चुके हैं लेकिन तुम हमारी इकलौती संतान हो, जीने का सहारा भी हो, तीर्थंकर आदिनाथ ने भी दीक्षा ली थी लेकिन पहले उन्होंने राज-सुख का उपभोग किया फिर वन जाकर दीक्षा ग्रहण की, तुम भी पहले विवाह कर लो फिन वन जाकर दीक्षा ले लेना। कुमार कहने लगे मां कहां आदिनाथ जिनकी चैरासी लाख पूर्व की आयु थी और मेरी आयु तो मात्र बहत्तर वर्ष की है। इसलिए मैं शीघ्र ही दीक्षा लेकर मुक्ति वल्लभा का वरण करके अपने आत्मसुख को भोगने जा रहा हूं। क्योंकि धर्म का पालन तो युवावस्था में ही संभव है और युवराज वर्द्धमान राजसी वैभव को छोड़कर अपने आत्मबल से काम रूपी सुभट पर विजय प्राप्त करके कामजयी, कालजयी बन गये।

ऐसे तीर्थकर महावीर स्वामी जिनके जीवन में मात्र एक घटना घटी और वे घट रहित अर्थात् अशरीरी अवस्था को प्राप्त हो गये। जिन्होंने अपने आत्मबल से अपनी दृढ़ संकल्पशक्ति से उस सुभट को जिसने तीनों लोकों को पराजित कर दिया है, जिसका निवारण अत्यंत कठिन है, ऐसे काम के वेग को कुमार अवस्था में ही अपने सुख व शांति का साम्राज्य प्राप्त करने के ध्येय से उसे अच्छी तरह से जीत लिया है, ऐसे महावीर स्वामी मेरे लिए सुनयनपथगामी बनें।

वर्तमान काल में उनकी शिक्षाएँ अधिक प्रासंगिक

तीर्थंकर महावीर की प्रासंगिकता

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

जैनधर्म के चैबीसवे तीर्थंकर महावीर भगवान का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को एक राज परिवार में लिच्छवि गणराज्य के राजा सिद्धार्थ तथा महारानी त्रिशला के घर में 599 ईसा पूर्व में कुण्डग्राम में हुआ था। उनका नाम वर्द्धमान रखा गया। आपके विशेष गुणों के कारण आपको वर्द्धमान, महावीर, सन्मति, वीर, अतिवीर इन पांच नामों से जाना जाता है।

तीस वर्ष की आयु में सांसारिक सुखों का त्याग करते हुए वे संन्यासी बन गए और मुनि दीक्षा लेकर 12 वर्षों तक घोर तपश्चरण किया। तदुपरान्त 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में पदविहार कर आपने संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु धर्म का उपदेश दिया। कार्तिक अमावस्या को पावापुरी में आपको निर्वाण प्राप्त हुआ। तीर्थंकर, सर्वज्ञ, आप्त पुरूष यह सब होते हुए भगवान महावीर एक विलक्षण सम्पूर्ण जीवन दृष्टि थे। भगवान महावीर जीवन का वह प्रकाश मार्ग है जिस पर चलकर अनंत सत्य के शिखरों को स्पर्श किया जा सकता है। महावीर आज के युग की आवश्यकता हैं, वर्तमान समस्याओं का समाधान हैं।

आत्मविजेता भगवान महावीर:

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने लिखा है कि -'मानव जाति के उन महापुरुषों में से जिन्होंने अपना ध्यान बाह्य प्रकृति से हटाकर मनुष्य की आत्मा के अध्ययन पर केन्द्रित किया, एक हैं महावीर। उन्हें 'जिन' अर्थात् विजेता कहा गया है। उन्होंने राज्य और साम्राज्य नहीं जीते अपितु आत्मा को जीता, सो उन्हें महावीर कहा गया। तप, संयम, आत्मशुद्धि और विवेक की अनवरत प्रक्रिया से उन्होंने अपना उत्थान करके दिव्यत्व प्राप्त कर लिया। उनका उदाहरण हमें भी आत्मविजय के उस आदर्श का अनुशरण करने की प्रेरणा देता है।'

अहिंसा की प्रयोगशाला महावीर का जीवन: भगवान महावीर स्वयं में सिद्धांत थे। उनका आदर्श जीवन शुद्धि की प्रेरणा देता है और जीवन शुद्धि का आधार है अहिंसा। भगवान महावीर ने अहिंसा को परम धर्म बताया व इंसान को बाहरी दुनिया के बजाय स्वयं पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

मनसा, वाचा और कर्म से अहिंसा को आत्मसात करने का संदेश समाज में स्थायी शांति के लिए महत्वपूर्ण है। भगवान महावीर की अहिंसा के अमोघ शस्त्र को महात्मा गांधी ने अपनाया और भारत को शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य की दासता से मुक्त कराया। उन्होंने किसी भी जीव की हत्या न करने, किसी को पीड़ा न पहुँचाने, किसी को दास न बनाने, किसी को यातना न देने और किसी का शोषण न करने का उपदेश दिया। द्वेष और शत्रुता, लड़ाई-झगड़े और शोषण में संघर्षरत विश्व को अहिंसा का उपदेश न केवल मनुष्य के लिए बल्कि जीवन के सभी रूपों के लिए एक विशेष महत्व रखता है। अहिंसा अपने शाब्दिक अर्थ की अपेक्षा अत्यंत व्यापक अर्थ रखती है। इसमें करुणा, सहानुभूति, दान, विश्वबंधुत्व और क्षमा समाविष्ट हैं। भगवान महावीर का सम्पूर्ण जीवन अहिंसा की ही एक प्रयोगशाला रहा। अतः शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए अहिंसा का आचरण जरूरी है। विश्व में शांति के लिए भगवान महावीर की अहिंसक जीवन शैली को आज सभी को स्वीकारना होगा।

भगवान महावीर के सर्वोदयी मार्ग में जीवमात्र के लिए समभाव विद्यमान है। दूसरों का बुरा चाहकर कोई भी अपना भला नहीं कर सकता। व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में विषमता से कोई वर्ग सुख-शांति से नहीं रह सकता। इसीलिए महावीर ने अहिंसात्मक अल्प-परिग्रह की व्यवस्था को उपादेय बतलाया। परस्पर समन्वय, सह अस्तित्व, सहिष्णुता एवं साम्यभाव ही अहिंसा और अपरिग्रह के पोषक तत्व हैं।

कोरोना काल में 'जियो और जीने दो' का संदेश अधिक प्रासंगिक: तीर्थंकर महावीर ने 'जियो और जीने दो' का संदेश दिया। जिसकी आज पूरे विश्व को जरूरत है। इस महावीर जन्म कल्याणक के मायने बहुत अलग हैं। 'जियो और जीने दो' का संदेश व्यापक अर्थ लिए हुए है। भगवान महावीर ने सम्पूर्ण जीवन को अहिंसा पूर्वक जीने को कहा। हम ऐसा जीवन जिएं जिससे किसी दूसरे प्राणी को कष्ट न हो और किसी के प्राणों का हरण न हो। जैसे हमें दुःख पसंद नहीं वैसे ही दूसरों को भी पसंद नहीं है।

स्याद्वाद-अनेकांत से वैचारिक मतभेद का खात्मा: भगवान महावीर के समय सबसे बड़ी बुराई वैचारिक मतभेद की पनपी थी और आज भी दुनिया इसी कारण से संघर्ष कर रही है। वैचारिक मतभेद आज अनेक समस्याओं की जड़ है। वैचारिक आतंकवाद के खात्मे के लिए उन्होंने स्याद्वाद और अनेकांत का अमोघ सूत्र दिया, जिससे यह बुराई समाप्त हो सकती है। 'ही' की जगह 'भी' का प्रयोग सभी झगड़ों का समाधान प्रदान करता है।

शेष पृष्ठ 18 पर .....

मध्य भारत का सबसे बड़ा अतिशय क्षेत्र दर्शनोदय तीर्थ थूबोनजी

विजय धुर्रा (9826516524
सह-सम्पादक, तीर्थ वंदना

उर्वशी और लीलट नदी के मध्य जंगल में स्थित, भारत का प्रथम तीर्थ जहां पर ग्राउंड लेवल पर एक साथ विशाल प्रतिमाओं से सुसज्जित श्री दिगम्बर जैन धर्म की मूल आम्नाय के 26 मंदिरों के साथ तपोवन में 'श्री दिगंबर जैन दर्शनोदय अतिशय तीर्थ क्षेत्र थूबोन जी" जिला अशोकनगर मध्य प्रदेश में स्थित है।

यूँ तो इस भूमि को रत्नगर्भिणी कहा गया है और इस भूमि पर कुछ जीते जागते तीर्थ स्थल भी विद्यमान हैं जहाँ सदियों से साधु-संत व तपस्वी अपनी ऊर्जा से इस भूमि को और भी ऊर्जावान बनाकर पावन करते रहते हैं।

मध्य भारत के अशोक नगर जिला मुख्यालय से तीस किलोमीटर दूर स्थित अतिशय क्षेत्र थूबोनजी, जिसे इस युग के महान संत, आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने **दर्शनोदय तीर्थ** नाम दिया है। उन्होंने इस तीर्थ के पुनरोद्धार करवाने के साथ ही जिन मन्दिरों की विशेषता बताते हुए कहा कि यह तीर्थ ऐतिहासिक पुरासम्पदा को अपने में समेटे हुए पूर्ण दर्शन को देने वाला है अर्थात् यहाँ भगवान जिनेन्द्र देव के पूर्ण रूप से दर्शन होते हैं इसलिए इस तीर्थ का नाम दर्शनोदय तीर्थ होगा । यह तीर्थ जैन जगत के ख्याति प्राप्त तीर्थ पुरोधा पाड़ाशाह से जुड़ा है।

एक हजार वर्ष प्राचीन है मूल मन्दिर

एक हजार वर्ष पूर्व शिवपुरी जिले के कोलारस रियासत में परागढ़ के प्रमुख श्रेष्ठी पाड़ाशाह रागा के व्यापार के लिए दूर-दूर जाया करते थे। कहते हैं कि उनका व्यापार देश देशान्तरों तक फैला था, वे एक बार थूबोनजी के जंगलों से निकल रहे थे, तभी उनका रागे लदा हुआ एक पाड़ा गुम हो गया। सेठ जी के सेवकों ने शाम तक उसे ढूँढने की बहुत कोशिश की किन्तु सफलता ना मिली। सेठजी ने सूर्यास्त होता देख अपना पड़ाव वहीं डाल दिया, सुबह जब सेवक पुनः पाड़े को ढूँढने गये तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। जो पाड़ा रात के अंधेरे में गुम हो गया था, वह थूबोनजी ताल के किनारे बैठा मिला। पूरा रांगा और उस पाड़े की लोहे की जंजीर सोने की हो गई। सेवकों ने पूरी बात से सेठ पाड़ाशाह को अवगत कराया। उन्होंने भाँप लिया कि इसी तलैया में पारस पत्थर है जो लोहे को सोना बनाता है। उन्होंने तलैया से पारस पत्थर निकलवा लिया और उसके माध्यम विशाल जिन मन्दिर बनवाये।

भगवान श्री शान्तिनाथ स्वामी की विशाल प्रतिमा विराजमान कर भव्य पाषाण के जिनालय की स्थापना कराई। कालान्तर में इसका गंगनचुंबी शिखर क्षरण को प्राप्त हो गया लेकिन जागृत समाजसेवियों, तीर्थ भक्तों के कारण लगभग एक हजार वर्ष बीत जाने के बाद भी अतिशय क्षेत्र थूबोनजी विद्यमान रहा।

परम पूज्य मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज के शब्दो में यहाँ विराजमान भगवान की प्रतिमाओं को देखकर वीतरागता के पूर्ण दर्शन होते हैं। मध्य भारत इस के सबसे बड़े अतिशय क्षेत्र पर यात्री सुविधाओं का विस्तार व विकास किया जा रहा है।

जिला मुख्यालय पर प्रभावशाली है जैन समाज

अशोक नगर जिला मुख्यालय व्यापार का बड़ा केन्द्र है, यह जिला मुख्यालय जैन समाज का गढ़ है। वर्तमान में यहाँ जैनों के ढाई हजार घर हैं जो जिला मुख्यालय पर नगर में सबसे अधिक संख्या में होने के कारण सामाजिक, राजनीतिक व व्यापार व्यवसाय में प्रथम पायदान पर है। यहाँ की अनाज मंडी शरबती गेहूँ की आवक के कारण भारतभर में विशेष स्थान रखती है। इस नगर की प्रसिद्धि में कृषि उपजों में श्रेष्ठ गुणवत्ता गेहूँ-चना का विशेष स्थान है। यही कारण है कि जैन समाज यहाँ हर उत्सव को महोत्सव बना देता है और जिन

धर्म की प्रभावना में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तैयार रहने वाले अशोकनगर में जैनचार्य विद्या सागर जी महाराज के परम प्रभाव शिष्य आध्यात्मिक संत मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य 1992 में विश्व की पहली त्रिकाल चौबीस की स्थापना की गई थी। तब से ही बुंदेलखंड की यात्रा पर आने वाले यात्रियों के साथ ही पुरातन नगरी चन्देरी के निकट होने के कारण बारह महीने पर्यटकों का आवागमन चलता रहता है।

सर्व सुविधाओं से युक्त आवासीय स्थल

यहाँ सर्व सुविधाओं से युक्त पन्द्रह कमरों की विशाल वातानुकूलित धर्मशाला के साथ ही साधारण धर्मशाला, यात्री प्रतीक्षालय, विशाल आचार्यश्री विद्यासागर संत निवास, पृथक आर्यिका वसतिका के साथ ही विशाल सभामंडप बनाया गया है। साथ ही वैवाहिक कार्यक्रम की सुविधाओं को देखते हुए भोजनशाला के विशाल डोम का निर्माण किया जा रहा है।

आहारशाला और अन्य वातानुकूलित यात्री प्रतिक्षायलयों का निर्माण किया जा रहा है, सर्व सुविधायुक्त दो सुलभ कॉम्पलेक्स हैं। सम्पूर्ण क्षेत्र को हरा भरा बनाने के लिए दस हजार ट्रॉली मिट्टी डालकर पाँच सुन्दर उद्यानों को विकसित किया गया है। क्षेत्र की सुरक्षा के लिए सम्पूर्ण क्षेत्र के चारों ओर आठ फीट ऊँची चारदीवारी बनाई गई है।

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनि राज के आशीर्वाद एवं जगत पूज्य मुनि श्री सुधासागर जी ऋषिराज की पावन प्रेरणा से एक भव्य सहस्त्र कूट जिनालय निर्मित होने जा रहा है, जिसमें 1008 प्रतिमाएँ स्थापित होगी और जो अद्वितीय होगा।

ऐसे भव्य जिनालय में आप भी प्रतिमा जी विराजमान करने का सौभाग्य प्राप्त करें और अतिशय पुण्य का बंध करें। आप अपने इष्टजन, मित्रजन, परिवारजन और साथियों को इस जिनालय में प्रतिमा स्थापित करने के लिए प्रेरित करें और पुण्य का छठवाँ हिस्सा पाएँ-

1,25,000 रु की न्योछावर राशि वाली 964 प्रतिमाएँ

5,00,000 रु न्योछावर राशि वाली चालीस प्रतिमाएँ

25,00,000 रु न्योछावर राशि वाली चार प्रतिमाएँ

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के हुए हैं दो चातुर्मास

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का प्रथम बार वर्षायोग सन् 1979 व दूसरी बार सन् 1987 में हुआ था। सतासी संघ के परम प्रभाव शिष्य मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज के मार्गदर्शन में तीर्थ क्षेत्र कमेटी कार्य कर रही है।

वार्षिक मेला

अंचल में जैन समाज का प्रभुत्व होने के साथ ही अतिशय क्षेत्र दर्शनोदय तीर्थ थूबोनजी की ख्याति भी चारों ओर फैली है, यहाँ वर्षिक मेला का आयोजन चौदह-पन्दह जनवरी को प्रति वर्ष किया जाता है विभिन्न राजनेता भी आते हैं। यहाँ संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के संघ के साधुओं का सान्निध्य मिलता रहता है। साथ ही बुंदेलखंड की यात्रा करने वाले मुनियों का भी सान्निध्य मिलता रहता है, इस तीर्थ की वंदना कर अपने सौभाग्य को जगाये।

संपर्क सूत्र-

अशोक जैन (अध्यक्ष) 94251-32065, विपिन सिंघई (महामंत्री) 94250-31108, सौरव बाँझल (कोषाध्यक्ष) 9425191955, विनोद मोदी (निर्माण मंत्री) 94253-61284

..... पृष्ठ 16 से शेष

धार्मिक, सामाजिक, रातनैतिक क्रांति के अग्रदूत महावीर: भगवान महावीर ने अपने जीवनकाल में बहुत-सी सामाजिक कुरीतियों की समाप्ति और समाज सुधार के लिए सम्यकदर्शन, सम्यकज्ञान और सम्यक आचरण के सिद्धांतों का प्रयोग किया। उन्होंने स्त्री दासता, महिलाओं के समान दर्जे और सामाजिक समता जैसे विषयों पर सामाजिक प्रगति की शुरूआत की। आज महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता और शुद्धता, जल संरक्षण, वृक्ष लगाओ, जनसंख्या नियंत्रण जैसे अभियान को गति प्रदान करने के लिए भगवान महावीर के सिद्धांत आज अत्यधिक प्रासंगिक हो गए हैं। भूकंप, सुनामी, आतंकवाद, हिंसा, जातिवाद, लिंगभेद आदि बुराईयों पर काबू पाने के लिए महावीर स्वामी के सिद्धांत अत्यंत उपयोगी और सार्थकता लिए हुए हैं। सामाजिक विषमता, राजनैतिक उठापठक, राष्ट्रीय चरित्र-हीनता और डगमगाती मानवीय निष्ठाओं को देखकर लगता है कि जड़मूल से क्रांति करने का समय आ गया है। इसलिए व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र परिवर्तन की दिशा प्रशस्त करने वाले भगवान महावीर स्वामी के दर्शन-शिक्षाओं से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। भगवान महावीर के सिद्धांतों पर आधारित जीवन मूल्य आज भी प्रांसगिक हैं। आज के भौतिकवादी वातावरण में इन सिद्धांतों के आधार पर गुणवत्तापूर्ण जीवन जिया जा सकता है। भगवान महावीर का उपदेश 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' एक- दूसरे का सहयोग करना ही जीव का जीव पर उपकार है, यह विश्व का उत्कृष्ट उपदेश है। कोरोना काल में इस संदेश की उपादेयता देखी जा सकती है।

'संतप्त-मानस शांत हो जिनके गुणों के गान में,
वे वर्द्धमान महान जिन विचरें हमारे ध्यान में।।' -
(महावीर पूजन)

जन्मदिवस पर विशेष

अद्वितीय विद्वान पंडित श्री गोपालदासजी वरैया

आधुनिक जैन विद्वत् परम्परा के आद्य महामनीषी गुरूणांगुरु पंडित श्री गोपाल दास जी वरैया (ई.सन् 1866-1917) का जन्म चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हुआ था। विलक्षण प्रतिभा के धनी एक ऐसे विद्वान् थे जो किसी परंपरागत गुरुकुल में अध्ययन किये बिना ही अपने स्वाध्याय के बल पर ही जैन धर्म, दर्शन, सिद्धान्त, न्याय एवं संस्कृत भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करके जैन जगत के शिरोमणि विद्वान् बन गए थे। आपके सन्त सदृश व्यक्तित्व के नैतिक आदर्श इतने उच्च थे कि एक बार रेल की यात्रा के मध्य में ही आपके पुत्र की आयु आधी टिकट के योग्य हो जाने पर आपने घर आकर आधी टिकट के मूल्य की धन राशि का मनीआर्डर रेल्वे को किया था। मनीआर्डर प्राप्त करके रेल अधिकारी आश्चर्य चकित रह गए थे। इसके बाद अंग्रेज अधिकारियों ने आपको मानद् न्यायाधीश का पद प्रदान किया था। आपने मात्र 51 वर्ष के अल्प जीवन में ही ब्रिटिश काल में देश से अशिक्षा के उन्मूलन और जैन सिद्धांतों के प्रचार प्रसार के लिए अकल्पनीय कार्य किये थे।

आपके महान् गुरुत्व एवं ज्ञानगाम्भीर्य के कारण ही क्षुल्लक श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी आदि अनेक विद्वानों एवं अनेक श्रद्धेय मुनिराजों ने आपसे शिक्षण प्राप्त किया था ।आपके द्वारा सृजित कृतियों में जैनसिद्धान्त से निदर्शन कराने वाली जैनसिद्धान्त प्रवेशिका और सुशीला उपन्यास उल्लेखनीय हैं। आपने सन् 1902 में मध्य प्रदेश स्थित मुरैना नगर में जैन धर्म दर्शन एवं संस्कृत की शिक्षा हेतु श्री गोपाल दिगंबर जैन सिद्धान्त संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की थी । इस महाविद्यालय में दक्षिण भारत सहित देश के विभिन्न प्रांतों के हजारों छात्रों ने धर्म दर्शन एवं संस्कृत की शिक्षा और आदर्श संस्कार प्राप्त करके विद्वत्ता के क्षेत्र में अमिट कीर्तिमान स्थापित किये एवं विभिन्न प्रतिष्ठित शासकीय पदों पर सेवाएं देकर राष्ट्र निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। तीर्थक्षेत्र कमेटी ऐसी महान विभूति के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

लेख साभार- व्हाट्सएप से

एक समृद्ध जैन विरासत केंद्र था कल्या

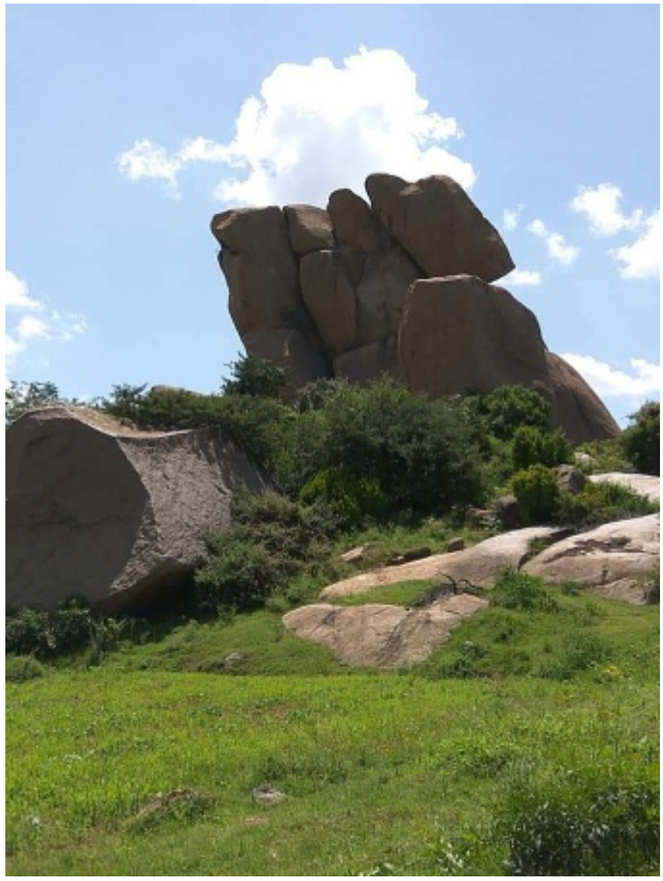

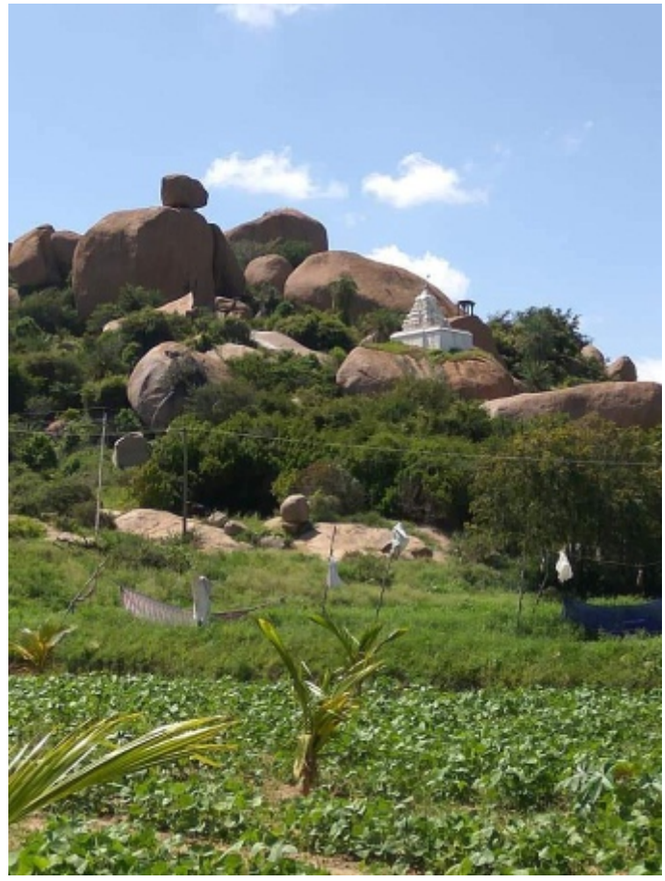

कर्नाटक के रामनगर जिला, मगाडी तलुका में एक छोटा सा गाँव है कल्या, पहाड़ियों से घिरा हुआ एक बहुत बड़ा स्थान था पुरातन कलावती पट्टन। यह जैन धर्म का एक ऐतिहासिक और प्रसिद्ध केंद्र था। एक समय सुप्रसिद्ध शहर था कल्या, पर आज कुछ भी नहीं बचा है वहाँ।

अब वहाँ केवल एक बहुत बड़ा और सुंदर मानस्तंभ ही बचा है, इस मानस्तंभ को देखकर आप कल्पना कर सकते हैं कि पहले इस स्थान पर कितने विशाल और सुंदर जैन मंदिर रहे होंगे। कभी यहाँ पर एक बहुत बड़ा जैन विद्या केंद्र था। मानस्तंभ के पीछे की चट्टानों पर जैन मुनियों के निवास स्थान हुआ करते थे।

कहा जाता है कि एक समय में यहाँ 75 जैन मंदिर थे, पर आज यह एक भी मंदिर के चिह्न भी नहीं बचे। किसी को नहीं पता कि इतने विशाल मंदिर कहाँ गायब हो गए। यहाँ पर कुछ वर्षों पूर्व पार्श्वनाथ भगवान का एक प्रतिमा मिली थी, जो अभी जनपद लोक म्यूजियम, रामनगर में विद्यमान है।

अंतिम श्रुत केवली भद्रबाहु मुनि और चंद्रगुप्त मौर्य इस स्थान पर कुछ दिन रुके थे। कुछ मुनियों ने इस स्थान पर सल्लेखना धारण की थी। एक बड़ा शिलालेख पहाड़ी की चोटी पर हिंदू मंदिर के सामने एक चट्टान पर मिला है। जैन शेट्टी (बसावी शेट्टी) के वंशजों को होयसल राजा वीर नरसिम्हा द्वारा इस स्थान की देखभाल करने का जिम्मा दिया गया था, जो बाद में 16 किमी दूर संखिघट्टा चले गए थे।

जैन और वैष्णवों के बीच एक विवाद था, उस विवाद को रोकने के लिए बुक्कराय को हस्तक्षेप करना पड़ा और एक समझौता किया गया उसे भुक्करा संधि के रूप में जाना जाता है। 1368 ई. का भुक्कराय शिलालेख आज भी कल्या में विद्यमान है।

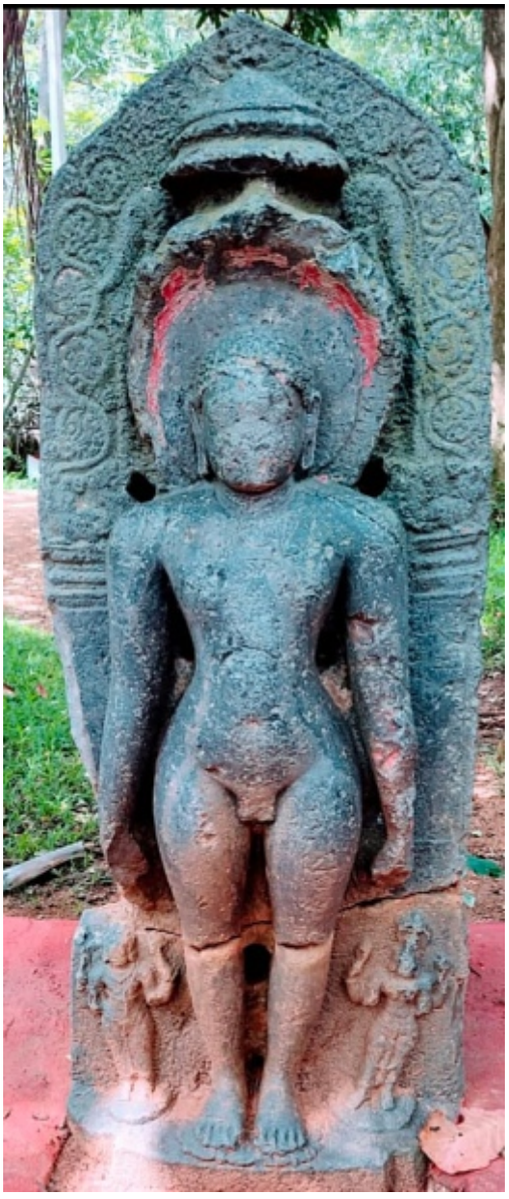

कल्या में ही धर्म संघर्ष क्यों हुआ?

सिर्फ कल्या में ही नहीं पेनुगोंड, आनेगुंदी, बेलगोला और कल्या ये 4 चार स्थान उस समय में बहुत बड़े और प्रसिद्ध जैन केंद्र थे। कल्या के जैन व्यापारी बसावी शेट्टी कुछ जैन श्रावकों के साथ मिलकर राजा बुक्काराय के पास गए और जैन-वैष्णवों के बीच के विवाद के बारे में सविस्तार बताया। तब बुक्काराय ने दोनों पक्ष को समझाया। दोनों पक्षों को आपस में मिलवाया व निर्णय दिया कि जैन और वैष्णव दोनों समान रूप से मान्य धर्म हैं, जैनियों से कहा कि वे प्रति परिवार के हिसाब से धन वैष्णवों को देंगे। इसके बदले में वैष्णव जैन मंदिरों का संरक्षण करेंगे है तथा जैन परिवारों को भी सुरक्षा प्रदान करेंगे। एक बहुत बड़ी बात इस शिलालेख में उल्लेख है कि वैष्णवों ने इस संघर्ष में जैनियों को मार डाला। ये पूरे भारत में एकमात्र ऐसा उल्लेख है जिसमें जैनियों के नरसंहार का उल्लेख है। इस शिलालेख की एक प्रति श्रवणबेलगोला के भंडारी बसदि में भी है।

सरकार को यह खुदाई करने की ज़रूरत है, यहाँ पर बहुत प्राचीन जैन विरासत मिल सकती है।

जी. एम. स्पूर्ति जैन
कुणीगल

"लोगों के मन पर राज करने वाला ही सच्चा नेता - आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज

अनादिनिधन पर्व अष्टान्हिका में सर्वत्र ही सिद्धों की आराधना, नंदीश्वर द्वीप की आकृति चैत्यालय की परिकल्पना करते हुए दिव्य जिन बिंबो की आराधना, अनुष्ठान आयोजित होते ही रहते हैं। उसमें भी हर जैनी के मन में यह भावना निश्चित रूप से रहती है कि जीवन में एक बार तो ऐसा अवसर मिले जिसमें सर्व विधानों में महा विधान, सर्वोच्च पद की प्राप्ति कराने वाला अनंत गुण संपन्न श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान करने, करवाने का सौभाग्य प्राप्त हो और उसमें भी अगर किसी मुनिराज, आचार्य श्री ससंघ सान्निध्य प्राप्त हो जाए तो यह निश्चित ही महा सौभाग्य है।

ऐसा ही महा सौभाग्य सातिशय पुण्य उदय से प्राप्त किया घाटोल निवासी गुरुभक्त श्री शिरीष सूरजमल सेठ परिवार ने। जिनके माध्यम से व सकल दिगंबर जैन समाज घाटोल के सहयोग से पूज्य मुनिकुंज जेष्ठ आचार्य श्री आदि सागर जी अंकलीकर के चतुर्थ पट्टाधीश चर्या चक्रवर्ती आचार्य श्री सुनीलसागर जी ससंघ सान्निध्य में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन बाल ब्रह्मचारी विजय भैया जी (लखनादौन) के निर्देशन में हुआ।
इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री के दर्शनार्थ पधारे राजस्थान सरकार के पूर्व गृहमंत्री एवं वर्तमान प्रतिपक्ष नेता एवं गुरुदेव के प्रति अटूट आस्था रखने वाले श्री गुलाबचंदजी कटारिया साथ में जिला अध्यक्ष श्री गोविंद राव ,पूर्व सांसद श्री शंकर निनामा, पूर्व चिकित्सा मंत्री श्री भवानी जोशी एवं भाजपा नगर अध्यक्ष श्री नीलेश जैन।
आचार्य ने कहा -

"जो लोगों के मन पर राज करे वही सच्चा राजनेता"

आचार्यश्री से व्यक्तिगत रूप से अपनी बात रखते हुए गुरु भक्त श्री गुलाबचंद बोले आज पुनः सौभाग्य जगा आपके दर्शन हो रहे हैं। फिर बात चली कि इस बार जैन समाज के सभी संगठनों ने अच्छा उत्साह व एका दिखाया है जिसके कारण सरकार को महावीर जयंती के दिन होने वाली रीट की परीक्षा को रद्द करना पड़ा। संभावित 25 जून तक रद्द किया। तो मतलब कि राजनेता केवल संगठन की ताकत ही समझते हैं इसलिए जैन समाज को हमेशा संगठित होकर ही आगे आना चाहिए। आगे कहते हैं कि आचार्य श्री आपकी ही कृपा से जीवन स्वस्थ है, मस्त है आपका और हमारा जीवन जीने का तरीका बिल्कुल अलग है। कहा आप परम तपस्यामयी, अनुशासित संयममय जीवन जीने वाले और हमारा आकुलता युक्त व्यस्त जीवन फिर भी आप की संगति से जो संस्कार बनते हैं उनसे प्रसन्न व आनंदमय जीवन का मार्ग खुलता है। बस आपका आशीर्वाद सदैव बना रहे। तो आचार्य श्री ने सहज पूछ लिया कि राजनीति की खींचातानी में आकुलता नहीं होती ??
तब गुलाबचंद जी ने विनम्र भाव से कहा कि हां मुझे गुस्सा आ जाता है, जब कुछ गलत दिखे तो सहन नहीं होता ,फिर भी उस समय आपको याद करके अनित्यता का बोध होता है कि आज मैं हूं तो कोई मेरी टाँग खींच रहा है कल कोई और आएगा तो उसकी टांग खिंचेगी। सब के दिन एक से नहीं रहते, यह राजनीति है। आज सत्ता है, कल नहीं रहेगी, इतना विचार करते ही आकुलता शांत हो जाती है। जब भी मौका मिलता है रास्ते में भी अगर सूचना समाचार मिलते हैं कि गुरुदेव यहाँ विराजमान है तो पहले आपके दर्शन की ही प्राथमिकता रहती है और रहेगी। मैं कभी भी कुछ माँगने नहीं आता इस बार भी यही प्रार्थना है कि मैं सदैव आपका अनुयायी बनता हुआ जिनशासन के सिद्धांतों पर चलकर समाज व देश के उत्थान के कार्य अहिंसा के पथ पर चलते हुए करता रहूँ।
आपका गुरु के प्रति समर्पण उदयपुर चतुर्मास 2017 से दृढ़ होता गया है आप जब भी पधारते हैं तो अवश्य ही चाहे कितनी ही देरी क्यों न हो रही हो सब काम छोड़ कर आचार्य श्री से संबोधन / मार्गदर्शन देने वाला प्रवचन अमृत जरूर ग्रहण करके ही प्रस्थान करते है। जब आप उदयपुर में आए थे तो कहा था कि "जितनी आचार्य श्री की उम्र है उतने साल मुझे हो गए राजनीति में लेकिन जो आपने पाया है उसका एक अंश भी नहीं प्राप्त कर सका हूं"।
आपका आना, सरलता से व्यवहार करना ऐसा लगता है मानो हमारे संघ परिवार के ही सदस्य हो। पधारे हुए अतिथियों द्वारा विमोचन की श्रृंखला में प्रोफेसर श्री उदयचंद जी द्वारा प्राकृत भाषा में रचित **महावीर कीत्ति चरियं,** आचार्य द्वारा रचित प्राकृत भाषा में स्तोत्र पाठ का हिंदी पद्यानुवाद पुस्तक **'पीयूष पयस्विनी'** जिसका इंदौर निवासी सुप्रसिद्ध लेखिका श्रीमती सरोज शाह द्वारा हिंदी अनुवाद किया गया है और मासिक पत्रिका **सन्मति एक्सप्रेस** व **जैनाचार पत्रिका** का विमोचन संपन्न हुआ।
अनुष्ठान में सिद्धों की आराधना के साथ महान गुरुओं की विशेष भक्ति करने का भी अवसर प्राप्त हुआ जिसमें 25 मार्च 2021 को अंकलीकर परंपरा के द्वितीय पट्टाधीश तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य श्री महावीरकीर्ति महाराज का दीक्षा महोत्सव व दूसरे ही दिन 26 मार्च 2021 को वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज का दीक्षा जयंती महोत्सव भी आचार्य श्री ससंघ के सान्निध्य में मनाया गया।

गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने दी ऐलक दीक्षा

युग शिरोमणि आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज के संबंध में जग जाहिर है कि उनका हर कार्य अनियत ही होता है।

ऐसा ही हुआ 7 अप्रैल 2021 को, जब क्षुल्लक श्री समताभूषण जी महाराज की ऐलक दीक्षा आचार्य भगवन के कर कमलों से सम्पन्न हुई। प्रातः ही क्षुल्लक जी ने केशलोंच किये थे जिसके पश्चात् आचार्य भगवन के मुख से नाम प्रस्फुटित हुआ - ऐलक श्री उपशम सागर जी महाराज। क्षुल्लक जी लंबे समय से मुनिवर श्री अक्षयसागर जी महाराज के संघ में अद्भुत साधना कर रहे थे। इतनी कम आयु में आपकी मौन सेवा भावना अत्यंत प्रबल है। आपने मुनिवर श्री माणिक सागर जी की अत्यंत वृद्धवय में पिता तुल्य सेवा की, जिसके परिणामस्वरूप आचार्यभगवन की कृपा आपको प्राप्त हुई।

"भारतीय वाङ्मय को आचार्य विद्यासागर महाराज का योगदान" ग्रंथ का लोकार्पण सम्पन्न

वाराणसी, यहाँ तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ की जन्मभूमि (भेलूपुर) में परम पूज्य मुनिश्री प्रमाणसागर जी महाराज एवं मुनिश्री अरहसागर जी महाराज के सान्निध्य में प्रा. अशोक कुमार जैन, आचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष-जैन बौद्धदर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के द्वारा सम्पादित ***'भारतीय वाङ्मय को आचार्य विद्यासागर महाराज का योगदान'*** ग्रंथ का लोकार्पण सवाई सिंघई सुधीरकुमार जैन (पूर्व अध्यक्ष- अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षत्र कमेटी), कटनी, इंजी. रमेशकुमार जैन, सतना, श्री दीपक जैन, अध्यक्ष-दि.जैन समाज, काशी, प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह, वाराणसी, श्री अरुणकुमार जैन, श्री सौरभकुमार जैन, वाराणसी के करकमलो सें किया गया।

यहाँ उल्लेखनीय है कि इस ग्रंथ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के जैनबौद्ध दर्शन विभाग द्वारा प्रो. अशोक कुमार जैन के संयोजकत्व में दि. 16-17 अप्रैल, 2018 को राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी सम्पन्न हुई थी। इस ग्रंथ में उन्हीं आलेखों का संग्रह है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के संस्कृत-हिन्दी काव्य साहित्य, प्रवचन साहित्य, प्रभावक व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानने के लिए यह ग्रंथ अत्यन्त उपयोगी है। पूज्य मुनिश्री प्रमाणसागर जी महाराज एवं मुनिश्री अरहसागर जी महाराज ने प्रो. जैन के इस कार्य की प्रशंसा की ओर साहित्य एवं धर्म प्रभावना हेतु उन्हें अपना शुभाशीष प्रदान किया।

- मनीष कुमार जैन

रानी बाग में व्यापक प्रभावना के साथ संपन्न श्री सिद्धचक्र विधान

परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज के मंगल आशीर्वाद, कुशल निर्देशन एवं परम पावन सान्निध्य में फाल्गुनी अष्टाह्निका महापर्व के पुनीत प्रसंग पर श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं विश्वशान्ति महायज्ञ का विराट आयोजन दिनांक 20 मार्च से 29 मार्च 2021 तक श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, रानी बाग, दिल्ली में व्यापक धर्मप्रभावना के साथ सानंद संपन्न हुआ। रोहिणी-पीतमपुरा क्षेत्र के प्रथम जिनालय में यह महाअर्चना लगभग 25 वर्षों के लम्बे अंतराल के पश्चात् आयोजित की गयी जिसमें समस्त समाज ने बढ़-चढ़ कर उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। सभी मांगलिक क्रियाएँ पं. श्री धरणेन्द्र जैन शास्त्री व पं. श्री विकर्ष जैन शास्त्री के विधानाचार्यत्व में तथा पारस अम्बर एण्ड पार्टी (दिल्ली) के मधुर संगीत लहरियों के मध्य विधि-विधान पूर्वक संपन्न हुई। भव्य साज-सज्जा, लाइटिंग, आकर्षक मांडला, सुगन्धित वातावरण तथा भक्तों के उत्साह से समस्त कार्यक्रम विशिष्ट ऊंचाइयों के साथ संपन्न हुआ।

सम्मेद शिखर जी में मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ससंघ का भव्य मंगल प्रवेश

बीस तीर्थंकरों की मोक्षस्थली शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखरजी की पावन भूमि पर सात वर्षों की लंबी यात्रा के बाद रविवार, 4 अप्रैल 2021 को सुबह लगभग सात बजे आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, प्रखर वक्ता 108 मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज व मुनि श्री 108 अरह सागर जी महाराज का भव्य मंगल प्रवेश रविवार को मधुबन स्थित गुणायतन में हुआ। गुणायतन प्रणेता मुनि श्री 108 प्रमाण सागर जी महाराज ससंघ के मधुबन प्रवेश के समय भक्तों द्वारा कोविड 19 के नियमों का पालन किया गया।

सम्मेद शिखरजी स्थित गुणयतन में प्रवेश करते ही मुनिश्री ७ दिनों के लिए एकांतवास में चले गए हैं। मुनि श्री के मंगल प्रवेश की बेला में देश के विभिन्न प्रान्तों से हजारों की संख्या में भक्तगण शामिल थे। मुनिश्री का वर्ष 2020 का वर्षाकाल चातुर्मास कर मध्यप्रदेश के कटनी में हुआ था वहाँ से पदविहार कर सम्मेद शिखरजी पहुँचे हैं।

जय जय गुरुदेव के नारों से गुंजायमान हुआ तीर्थनगरी मधुबन

इस दौरान जगह-जगह मुनि श्री की अगवानी की गयी। जैन समाज के लोगों ने मुनि श्री का पाद प्रक्षालन कर व श्रीफल अर्पित कर स्वागत किया। मुनि श्री ने मधुबन की सभी संस्थाओं के मंदिरों के दर्शन किये। राज्य सरकार द्वारा मुनिश्री को राजकीय अथिति घोषित किया गया है।

मुनि श्री प्रमाण सागरजी महाराज के मंगल प्रवेश में मधुबन पीरटांड़ पुलिस के अलावा पीरटांड बीडीओ-सीओ, तीर्थक्षेत्र कमेटी पूर्वांचल अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल सेठी, शाश्वत ट्रस्ट महामंत्री श्री राजकुमार अजमेरा, श्री सुनील अजमेरा, गुणायतन सीइओ श्री सुभाष कुमार जैन, तीर्थक्षेत्र कमेटी मधुबन कार्यालय के अधिकारी एवं देश भर से आये भक्तगण उपस्थित थे।

त्रिदिवसीय नवागढ़ महोत्सव अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न

नवागढ़ महोत्सव खजुराहो महोत्सव की तरह मनाया जाये : पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप आदित्य

नवागढ़। महरौनी विकासखंड में स्थित दिगम्बर जैन प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में परम पूज्य आचार्य श्री प्रमुखसागर जी ससंघ के सान्निध्य में

प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जय निशांत भैया जी के निर्देशन में 14 से 16 मार्च 2021 त्रिदिवसीय नवागढ़ महोत्सव विविध आयोजनों के साथ अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न हुआ।

इस दौरान दोपहर 1 बजे से मूलनायक अरनाथ भगवान के वार्षिक महामस्तकाभिषेक में श्रद्धालु उमड़ पड़े और अगाध श्रद्धा के साथ भगवान का महामस्तकाभिषेक किया। प्रथम कलश से महामस्तकाभिषेक करने का सौभाग्य ब्र. जय कुमार निशान्त जी, इंजी. शिखर चंद्र पुष्प परिवार टीकमगढ़ एवं श्री प्रवीण जैन (संपादक, दैनिक विश्व परिवार) झाँसी परिवार वालों को प्राप्त हुआ। शांतिधारा करने का अवसर श्री अशोक जैन, रतन सेल्स झाँसी को प्राप्त हुआ। आचार्य श्री प्रमुखसागर जी ने अपने श्रीमुख से शांतिधारा का उच्चारण किया।

भूगर्भ से प्राप्त अतिप्राचीन मूलनायक अरनाथ भगवान का वर्ष में एक बार ही अभिषेक, महामस्तकाभिषेक के रूप में किया जाता है, इसलिए श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखा गया। ध्वजारोहण श्री धरणेन्द्र जैन आईएएस (आयुक्त चुनाव आयोग मध्यप्रदेश) भोपाल, ने किया।

नवागढ़ तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रचारमंत्री डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने बताया कि 14 मार्च को दोपहर 3 बजे से मौनिया लोकनृत्य प्रतियोगिता हुई जो आकर्षण का केंद्र रही। सभी ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देकर समा बांध दिया। प्रतियोगिता में ग्राम डूँडा की प्रस्तुति को प्रथम, द्वितीय स्थान अंतौरा तथा नेकौरा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। अजनौर एवं मैनवार की मौनिया पार्टी को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। पूर्व पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

अतिशय क्षेत्र गिरारगिरि में आदिनाथ जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव श्रद्धा पूर्वक मनाया गया

गिरार, ललितपुर। मड़ावरा विकासखंड में स्थित अतिशय क्षेत्र गिरारगिरिजी में जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ (ऋषभदेव) जन्म कल्याणक एवं तप कल्याणक महोत्सव श्रद्धा और आस्था के साथ सोमवार को उत्साह पूर्वक मनाया गया।

प्रातः बेला में मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान का अभिषेक और शांतिधारा श्रद्धालुओं द्वारा भक्ति के साथ किए गये। प्रथम कलश का सौभाग्य श्री अशोक कुमार जैन- श्रीमती प्रतिभा जैन सपरिवार नरसिंहगढ़, द्वितीय कलश का सौभाग्य श्रीमती शशि प्रभा श्री मुकेश जैन सपरिवार बरायठा , तृतीय कलश का सौभाग्य सेठ श्री विमल जैन ,श्री सेठ हरिश्चंद्र जैन सपरिवार बरायठा, चतुर्थ कलश का सौभाग्य श्री शिखर चंद्र जैन, श्रीमती लक्ष्मी बाई, श्री संजीव श्रीमती प्रियंका समस्त परिवार बड़ामलहरा ने प्राप्त किया एवं उपस्थित सभी लोगों ने श्री आदिनाथ भगवान के अभिषेक का सौभाग्य प्राप्त कर पुण्य अर्जन किया। अनेक श्रद्धालुओं के नाम ऑनलाइन प्राप्त हुए जिन्हें शांतिधारा में उच्चारित किया गया।

तीर्थंकर ऋषभदेव की शिक्षाएँ आज अधिक प्रासंगिक हैं : मुनि श्री प्रवरसागर महाराज

इस अवसर पर आचार्य विनिश्चय सागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य मुनि श्री 108 प्रवर सागर जी महाराज एवं क्षुल्लक श्री 105 वीर सागर जी महाराज का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ। श्री 1008 आदिनाथ विधान एवं वात्सल्य भोज का पुण्यार्जन व्या. श्री सुरेश चंद्र जैन , व्या. श्री सुनील कुमार जी जैन व्या परिवार बरायठा ने प्राप्त किया।

श्रद्धालुओं ने जहाँ आदिनाथ भगवान के जन्म कल्याणक महोत्सव पर आदिनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक किया, वहीं श्री आदिनाथ महामंडल विधान विधि विधान के साथ संपन्न किया गया। समस्त कार्यक्रम कोविड-19 के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए किये गये। आयोजन में अतिशय क्षेत्र गिरार कमेटी का योगदान रहा।

इस अवसर पर मुनि श्री प्रवरसागर जी महाराज ने अपने सम्बोधन में कहा कि भगवान ऋषभदेव जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर हैं, उनका जन्म चैत्र कृष्ण नवमी को अयोध्या के महाराजा नाभिराय तथा माता मरुदेवी के यहाँ हुआ था, वहीं

माघ कृष्ण चतुर्दशी को इनका निर्वाण कैलाश पर्वत पर हुआ। इन्हें आदिनाथ आदि अनेक नामों से भी जाना जाता है। आज के दिन पूरे देश में उनका जन्म कल्याणक उत्साह से मनाया जाता है। तीर्थंकर ऋषभदेव भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता माने जाते हैं। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में समागत उनके उल्लेख यह कहने के लिए पर्याप्त हैं कि वे ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने मानव समुदाय को कृषि, लेखन, व्यापार, शिल्प, युद्ध और विद्या की शिक्षा दी। उनकी शिक्षाएँ आज अधिक प्रासंगिक हैं। उनका एक प्रमुख संदेश था कृषि करो या ऋषि बनो। उन्होंने मानव जाति को पुरुषार्थ (कर्म) का उपदेश दिया।

सभ्यता-संस्कृति के प्रवर्तक तीर्थंकर ऋषभदेव : तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) जन्म कल्याणक के प्रसंग पर उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने बताया कि लेखन कला और ब्राह्मीलिपि का आविष्कार तीर्थंकर ऋषभदेव ने किया था। विभिन्न साक्ष्यों द्वारा यह पुष्टि हुई है। मानवीय गुणों के विकास की सभी सीमाएँ भगवान ऋषभदेव ने उदघाटित कीं। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नामकरण 'भारतवर्ष' इन्हीं की प्रसिद्धि के कारण विख्यात हुआ, यह ऐतिहासिक तथ्यों से प्रमाणित है। भगवान ऋषभदेव द्वारा बताई गई जीवन शैली की हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक व्यवस्था में काफी प्रासंगिकता एवं महत्ता है। उनके द्वारा प्रतिपादित ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न क्षेत्रों में ऐसी झलकियाँ मिलती हैं, जिन्हें रेखांकित करके हम अपने सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं। भगवान ऋषभदेव ने महिला शिक्षा तथा स्त्री समानता का उद्घोष किया था।

अमावस्या पर पैठण में संपन्न हुई मुनिसुव्रतनाथ भगवान की विशेष पूजा

औरंगाबाद। श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान अतिशय क्षेत्र पैठण में अमावस्या के निमित्त ऑनलाइन अभिषेक महोत्सव का आयोजन किया गया। यह महोत्सव पुष्पगिरि तीर्थ प्रणेता आचार्य श्री पुष्पदंत सागर महाराज के शिष्य आचार्य प्रसन्न सागर महाराज व सौम्य मूर्ति श्री पीयूष सागर महाराज के आशीर्वाद व प्रेरणा से आयोजित किया गया। जूम एप, फेसबुक व जिनवाणी चैनल के माध्यम से हजारों भक्तों ने इसका लाभ लिया। इस दौरान मुनि सुव्रतनाथ भगवान का पंचामृत-अभिषेक किया गया। इंद्र इंद्राणी होने सौभाग्य श्री अशोक सुमन जैन को मिला, शांतिमंत्र का लाभ श्री प्रदीप मांगीलाल पहाड़े हैदराबाद को मिला और दुग्धाभिषेक का लाभ मनोज चौधरी हैदराबाद को मिला। अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागरजी महाराज ने अभिषेक व शांति मंत्र का पाठ किया। भगवान की संगीतमय महाआरती की गई। 18 महीनों के पश्चात भक्तों को महाभिषेक का पुण्य लाभ मिला। औरंगाबाद, पैठण, मुंबई, पुणे, बीड़, परभणी, देऊलगांव राजा, जालना, पटना, बिहार, दिल्ली, नागपुर, सोलापुर, अहमदनगर, जलगांव, नासिक, मालेगांव, हैदराबाद आदि स्थानों से भक्तों ने ऑनलाइन समारोह के माध्यम से दर्शन किए। महोत्सव को सफल बनाने के लिए अध्यक्ष श्री महावीर बड़जाते, महामंत्री श्री विलास पहाड़े, कोषाध्यक्ष श्री विजय पापड़ीवाल, न्यासी, श्री प्रमोद कासलीवाल, श्री जयकुमार बाकलीवाल, श्री रायचंद भूस, श्री मनोज काला, श्री प्रकाश कासलीवाल, श्री कैलास पाटनी, श्री संजय गंगवाल, श्री किशोर भाकरे, श्री राजेंद्र काला, श्री सुमित गंगवाल, श्री स्वदेश पांडे, श्री अभिजीत काला, श्री संजय पापड़ीवाल ने प्रयास किया।

आपने प्रवचन में कहा कि पैसा मानव मन की सबसे खराब खोज है लेकिन मनुष्य के चरित्र को परखने की सबसे विश्वसनीय सामग्री है। जीवन केवल धन कमाने के लिए नहीं, वह धर्म कमाने और पुण्य को बढ़ाने के लिए भी है। पुण्य को बढ़ाए बिना, जीवन में बरकत संभव नहीं है। धर्म को बढ़ाए बिना, धन बढ़ने वाला भी नहीं है। यह काम वासना से भी भयंकर है। धर्म से ही मन की भूख को तृप्त किया जा सकता है। दीवारें रखिए लेकिन, इतनी ऊंची मत रखिए कि अपना भाई और पड़ोसी ही दिखाई ना पड़े। इतना दान मत करो कि किराए के मकान में रहना पड़े और इतना संग्रह भी मत करो कि नर्क में जाना पड़े। जितनी शक्ति है उतना करो, शक्ति का अतिक्रमण भी ना करो और उसे छुपाओ भी नहीं। सामर्थ्य है तो दान पुण्य, तीर्थ यात्रा करनी ही चाहिए। नहीं कर पा रहे हो तो, करने वालों की अनुमोदना करना चाहिए।

गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी का दिल्ली में शुभागमन

नई दिल्लीः त्याग एवं तपस्या की प्रतिमूर्ति, प्रमुख जैन साध्वी आर्यिका ज्ञानमती माता जी का संघ सहित 20 वर्ष बाद दिल्ली आगमन पर भव्य स्वागत किया गया। पांचसौ से भी अधिक दुर्लभ ग्रंथों की लेखिका 87 वर्षीया साध्वी की विशाल शोभायात्रा ऋषभविहार, सूरजमल विहार होते हुए दिगंबर जैन मंदिर प्रीतविहार पहुंची तो पुष्प वर्षा कर उनका स्वागत किया गया। वे सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी (महाराष्ट्र) में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की सर्वोच्च 108 फुट ऊंची प्रतिमा स्थापित कराकर, प्रयाग, अयोध्या व हस्तिनापुर होते हुए यहाँ पहुँची हैं।

सामुदायिक सभागार में आयोजित विशाल धर्मसभा में माता जी ने कहा कि भारत अहिंसा प्रधान देश है। विश्व के सभी धर्मों में अहिंसा ही सर्वोत्कृष्ट धर्म है। हम सबको मन, वचन व काय से अहिंसा का दृढता से पालन करना चाहिए। कोरोना के इस संकट काल में हम सब अहिंसा व धर्म के कारण ही सुरक्षित हैं। हमारे देश में तीर्थक्षेत्र अयोध्या, सम्मेदशिखरजी, महामंत्र णमोकार, मंगल पाठ, गौतम गणधर की वाणी तथा अष्टान्हिका पर्व अनादि निधन व शाश्वत हैं।

माताजी की प्रमुख शिष्या आर्यिका चंदनामती माताजी ने कहा कि प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने मानव को जीवन जीने की कला सिखाई उन्ही के बडे पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारतवर्ष पडा, अब दिल्ली में माता जी के सान्निध्य में उन्ही भरत की 31 फुट ऊंची प्रतिमा स्थापित कराई।

पीठाधीश्वर रवींद्रकीर्ति स्वामी ने कहा कि हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की स्थापना कराकर माता जी ने ऐतिहासिक कार्य किया है, जहां विश्वभर से शोधार्थी आते हैं, माताजी को दो विश्वविद्यालयों ने डीलिट की मानद उपाधि से अलंकृत किया है। वे यहां दो माह के लिए ज्ञान की गंगा बहाने आयी हैं। श्री प्रमोद जैन (वर्धमान) ने संचालन किया। श्री बिजेंद्र जैन ने माता जी के प्रशस्तिपत्र का वाचन किया। श्री निर्मल जैन सेठी, श्री अनिल जैन (कमल मंदिर), श्री कमल चंद, श्री हेम चंद जैन, श्री जवाहरलाल जैन, श्री विजय जैन आदि गणमान्य व्यक्तियों ने माता जी को विनयांजली अर्पित की। सैंकडों भक्तों ने अर्घ समर्पित कर माताजी की वंदना की। कमल मंदिर में एक दिन रुककर माताजी लाल मंदिर पहुंची जहां जैन समाज के अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन सहित सैंकडो पदाधिकारियों ने माताजी का अभिनंदन किया। यहां से विहार कर माताजी जैन मंदिर राजा बाजार पहुंच गई जहां उनके सान्निध्य में सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न हुआ है। महावीर जयंती कार्यक्रम भी यहीं पर आयोजित किए जाएँगे।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्याध्यक्ष श्री राजेंद्र के. गोधा बने सम्मेद शिखरजी समन्वय समिति के स्थायी सदस्य

सम्मेद शिखरजी में जैन धर्म के दिगम्बर और श्वेताम्बर संप्रदायों की समन्वय समिति कार्य कर रही है, इस समिति में दोनों संप्रदायों के गणमान्य व्यक्तियों को सदस्य के रूप में लिया जाता है। इस बार समन्वय समिति ने दो श्वेतांबर व दो दिगंबर श्रेष्ठियों को इस समिति में स्थायी सदस्य बनने के लिए निवेदन किया था जिसमें सर्वप्रथम भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष व महामंत्री श्री राजेंद्र के. गोधा को चुना गया व उनसे आग्रहपूर्वक अनुरोध किया गया कि वे समिति के अनुरोध को स्वीकार करें। उनके साथ ही समिति ने श्री प्रदीप जैन (कंट्री इन), श्री रमेश मूथा (चेन्नई) और सेलो कंपनी मुंबई के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री प्रदीप राठौर को भी स्थायी सदस्य बनाया है। समिति ने अपने वकत्वय में कहा है कि इन चारों प्रतिष्ठित व्यक्तियों के जुड़ने से समिति और मजबूत होगी और हम इनके अनुभवों का लाभ मिलेगा। यह अनुरोध पत्र तीर्थराज श्री शिखरजी जैन समन्वय समिति के अध्यक्ष श्री कमलसिंह रामपुरिया, उपाध्यक्ष श्री ताराबेन व प्रमुख संयोजक श्री एम. पी. अजमेरा ने संयुक्त रूप से लिखा, जिसे श्री राजेंद्र के. गोधा ने स्वीकार लिया है।

सम्मेदशिखरजी कलश मंदिर में दर्शनार्थ पहुँचे रेलवे अधिकारी

धनवाद के डीआरएम आशीष बंसल व एडीआरएम आशीष कुमार शुक्रवार को सपरिवार शाश्वततीर्थ स्थल मधुबन पहुंचे। दोनों अधिकारियों ने कलश मंदिर में दर्शन किए। डीआरएम ने कहा कि शाश्वत तीर्थक्षेत्र के कण-कण में जीवन का सार्थक अर्थ विराजमान है, यहाँ की भूमि का कण-कण पावन है। ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार जैन अजमेरा के निर्देशन पर भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के वरिष्ठ प्रबंधक श्री सुमन कुमार सिन्हा व श्री प्रदुम्न कुमार जैन ने प्रतीक चिह्न देकर अधिकारियों का स्वागत किया, कमेटी के वरिष्ठ प्रबंधक ने डीआरएम से पारसनाथ से गिरिडीह रेल लाइन का काम शुरू कराने व इसके लिए राशि आंवटित करने की मांग की। डीआरएम ने इस माँग पर विचार करने का आश्वासन दिया। मौके पर रेलवे अधिकारी वी नयन, ट्रस्ट के ए सैदी, श्री गंगाधर महतो, सिद्धादतन के श्री नीतेश जैन आदि सज्जन उपस्थित थे।

महावीर जन्मकल्याणक के दिन होने वाली राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (रीट) 2021 के विरुद्ध उच्च न्यायालय में याचिका दायर

रीट परीक्षा – 2021 को 25 अप्रैल महावीर जयंती के दिन नहीं करवाकर अन्य तारीख पर करवाने हेतु सरकार को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी व राजस्थान जैन सभा के द्वारा दिए गए प्रतिवेदनों पर सुनवाई नहीं होने के कारण उक्त संस्थाओं ने अपने कार्याध्यक्ष एवं महामंत्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, राजेन्द्र के. गोधा व राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष श्री कमल बाबू जैन व मंत्री श्री प्रदीप जैन के द्वारा जाने-माने अधिवक्ता श्री महेन्द्र शाह एण्ड एसोसिएट्स के जरिये दिनांक 22.03.2021 को दायर की गई थी जिसकी सुनवाई दिनांक 25.03.2021 को माननीय मुख्य न्यायाधिपति की खण्डपीठ में 4 1 नम्बर (याचिका नम्बर 3903/2021) पर हुई।

उक्त याचिका अधिवक्ताओं श्री महेन्द्र शाह एण्ड एसोसिएट्स ने इन आधारों पर दायर की है कि भारतीय संविधान की प्रस्तावना व अनुच्छेद 25 व 26 में दिए गए धार्मिक भावनाओं, विश्वास, पूजा, अर्चना, समारोह में भाग लेने के लिए सुरक्षित अधिकारों के विरुद्ध है।

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (रीट) 2021 हुई निरस्त

राजस्थान में महावीर जयंती को बड़े ही धूमधाम तरीके से मनाया जाता है। इस बार रीट की परीक्षा भी 25 अप्रैल 2021 को ही प्रस्तावित थी। वहीं, 25 अप्रैल को महावीर जयंती भी थी, ऐसे में परीक्षा देने वाले अभ्यर्थी इसे रद्द करने की मांग लगातार करते हुए चले आ रहे थे। रीट परीक्षा के स्थगन की सूचना माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान ने दी। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष और रीट मुख्य समन्वयक प्रो. डॉ डीपी जारोली ने बताया कि सीएम के निर्देश के हिसाब से बोर्ड शीघ्र ही आर्थिक रूप से कमजोर अभ्यर्थियों को आवेदन करने का अवसर देगा। अब राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा अब 20 जून (रविवार) को आयोजित की जाएगी।

निर्यापक श्रमण मुनिश्री समयसागरजी महाराज की मुनि दीक्षा के पावन दिवस पर धर्म बंधु वात्सल्य आधार अभियान के अंतर्गत संस्कार धाम जीवदया समिति, मुंबई द्वारा गायों का वितरण जैन संघ पुणे, का भी मिला सहयोग

प. पू. संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद से प. पू. निर्यापक श्रमण मुनिश्री नियमसागर जी महाराज ससंघ के मार्गदर्शन से तरुणाई के प्रखर वक्ता, शंका समाधान के प्रणेता, गुणायतन के प्रेरक मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज और प.पू. मुनिश्री अक्षयसागरजी महाराज की प्रेरणा से दक्षिण भारत में 25 जैन किसानों को खेती के साथ दुग्ध विक्रय कर आय बढ़ाने के लिए गिर गायों का वितरण किया गया।

इसमें अगस्त 2019 में दक्षिण भारत में आई महाप्रलयंकारी बाढ़ से पीड़ित उन लोगों को प्राथमिक आधार पर गाय प्रदान की गई हैं जिनकी गाय-भैंसें उस समय बाढ़ में बह गयी थीं। गाय के दूध से परिवार का निर्वाह भी चले और गोबर आदि का उपयोग खेती में हो, इस उद्देश्य से अल्प भूधारक गरीब परिवारों को संस्कार धाम जीवदया समिति, मुंबई द्वारा 25 गायों का वितरण किया गया है।

संस्कार धाम जीवदया समिति ,मुंबई द्वारा बाढ़ पीड़ित पाँच गरीब परिवारों के लिए घर का निर्माण, अनाज आदि जीवन आवश्यक वस्तुओं के वितरण के लिए 5,00,000 रुपये, 1000 परिवारों के लिए बर्तन सेट, 10,000 नोटबुक, पेन आदि सामग्री भी प्रदान की जा चुकी है । इसमें देशव्रती श्री नरेश भाई संघवी, धर्मानुरागी किरीटभाई दोशी, श्री राजेंद्र सेठी सीए, एवं श्री मनीष जैन सीए आदि मुंबई के एवं देश विदेश से संस्कार धाम जीवदया समिति से जुड़े हुए सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं का योगदान रहा है।

इस गाय वितरण के कार्य में जैन संघ पुणे, विशेषकर धर्मानुरागी श्री महावीर मित्तल, ब्र. चंद्रप्रकाश मित्तल का भी बहूमूल्य सहयोग रहा है।

प. पू. मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज और प. पू. मुनिश्री अक्षयसागरजी महाराज की प्रेरणा से अनेक संस्थाओं और व्यक्तिगत दानदाताओं के माध्यम से दक्षिण भारत में घर निर्माण, छात्रों को छात्रवृत्तियाँ, जीवकोपार्जन हेतु घर बैठे लघु उद्योग चलाने के विविध साधन देकर आर्थिक रूप से सक्षम बनाने का कार्य निरंतर चल रहा है।

जन जागजरण साइकिल यात्रा अभियान के पोस्टर का विमोचन

जयपुर। आचार्य श्री विद्यासागर महामुनिराज की प्रेरणा से चल रहे भारत को भारत बनाने के अभियान में जन जागरण साइकिल यात्रा अभियान का आयोजन किया जाएगा। 1600 किलोमीटर की जन जागरण साइकिल यात्रा के पोस्टर का विमोचन **भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष एवं महामंत्री** श्री राजेंद्र के गोधा, डॉ. विनोद जैन, श्री अभादि जैन परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य एवं प्रदेश महामंत्री श्री विनोद जैन 'कोटखावदा, डॉ. शीला जैन, श्री मनीष बैद, श्री विनोद छाबड़ा, श्री दीपेश छाबड़ा, श्रीमती रेखा पाटनी, श्री राजेंद्र काला, श्री मनोज ठोलिया ने दुर्गापुरा स्थित चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में एक सादा समारोह में किया। यात्रा संयोजक श्री मनीष चौधरी ने बताया कि यात्रा कोरोना की स्थिति को देखते हुए गाइडलाइन और दिशा निर्देशों के अनुरूप आयोजित की जाएगी। जन जागरण साइकिल यात्रा 10 अप्रेल को हवामहल से प्रारंभ होकर टोंक, देवली, चंवलेश्वर पार्श्वनाथ, कोटा, उज्जैन, इंदौर, नेमावर होती हुई 1600 कि.मी. तय कर दिल्ली पहुंचेगी। यह यात्रा लगभग 20 दिन में पूरी होगी। यात्रा के दौरान लोगों को देश का नाम पुनः इंडिया के स्थान पर भारत लिखने और बोलने के लिए जाग्रत किया जाएगा। अहिंसा एवं शाकाहार का भी प्रचार प्रसार किया जाएगा।

सांगली, महाराष्ट्र के खेत में मिली प्राचीन स्वर्ण प्रतिमा

महाराष्ट्र के सांगली में खेतसकी जुताई करते समय सुन्दर एवं आकर्षक जैन तीर्थंकर की मूर्ति मिली है। यह प्रतिमा २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा है।

महाराष्ट्र में आये दिन जैन प्रतिमाएँ प्राप्त होती रहती हैं, जिससे यह साबित होता है कि महाराष्ट्र में प्राचीन काल में जैन धर्म का बहुत प्रचार- प्रसार था।

सम्मेदशिखर जी के जंगलों में लगी आग बुझाई गई
राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचंद्र जैन ने ट्वीट कर दी आग बुझने की जानकारी

प्रभात जैन Prabhat Jain @prabhatji_jain · 18h

#सम्मेदशिखरजी पर्वत पर लगी हुई आग बुझा दी गई है।वनविभाग के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के हम अत्यंत आभारी हैं कि उन्होंने पूरी तत्परता से आग बुझाने का सफल अभियान चलाया। अब किसी प्रकार की चिंता करने का कोई कारण नहीं है।
भ. पार्श्वनाथ स्वामी की जय
अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठियों की जय

बीस तीर्थंकरों की मोक्ष भूमि शाश्वत तीर्थक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर पूरे विश्व में जैनियों का सबसे बड़ा तीर्थ स्थल है, यहां लाखों श्रृद्धालु यात्रा के लिए देश-विदेश से आते है, ऐसे विश्व वंदनीय क्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी के पर्वत "पारसनाथ" में आग लगने की घटना पूरे विश्व के जैनियों के लिए बेहद चिंताजनक घटना थी। यह खबर पत्रकारों या सोशल मीडिया के माध्यम से विश्वभर के जैन धर्मावलंबियों को मिल चुकी थी।

वन विभाग और स्थानीय समाज सेवी समूहों की सजगता से उस आग को रोकने के लिए सभी प्रबंध किए जा रहे थे परन्तु हर बीतते दिन के साथ तीर्वता से आग पारसनाथ पर्वत पर फैलती जा रही थी। सूत्रों की मानें तो आग पर्वत के निचले छोर डेढ़ मील से प्रारम्भ होते हुए कुर्थीबारी, चंदन चौक, गन्धर्वनाला, सीतानाला, गिटीगढ़ा, चन्द्रप्रभु टोंक के पूर्वी क्षेत्र, भाताघर, फुलीबागान आदि को चपेट में ले चुकी थी।

इस घटना क्रम में तीर्थक्षेत्र कमेटी मुख्य वन्य प्राणी संरक्षक से लगातार संपर्क करती रही, जिसके परिणाम स्वरूप मुख्य वन्य प्राणी संरक्षक ने इस घटना को गंभीरता से लिया और विभाग की ओर से तीव्र प्रतिक्रिया मिली जिसमें वन्य जीव अभ्यारण्य हजारीबाग के वन्य प्रमंडल, वन्य प्राणी प्रमंडल प्रक्षेत्र पारसनाथ, वनविभाग गिरिडीह पूर्वी क्षेत्र के रेंज, वनपाल आदि अग्निशमन के साथ इस आग को बुझाने के लिए जोर-शोर से प्रयास में जुट गए।

इस कार्य को करने में सभी को कड़ी मेहनत करनी पड़ी, कई अधिकारी तो

रात-भर तक आग को बुझाने का भरपूर प्रयास करते रहे। इस कार्य को करते हुए कई अधिकारी रात्रि ज्यादा होने और अंधेरा होने से पर्वत के घनघोर जंगल में रास्ता भटक गये जिन्हें बाद में जंगल से बाहर भी निकाल लिया गया लेकिन इन सब के बावजूद सभी अधिकारियों ने हौसला दिखाया और पूरी टीम पर्वत की आग को बुझाने की सफलता प्राप्त की।

ऐसे कर्मठ पदाधिकारियों, कर्मचारियों को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने पूरी टीम का इस पुनीत कार्य के लिए आभार प्रकट किया है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभात चंद्र जैन व कार्याध्यक्ष व महामंत्री श्री राजेंद्र के. गोधा व शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री राजकुमार अजमेरा ने वन विभाग व जिला प्रशासन के सभी अधिकारियों के प्रति खूब-२ आभार व्यक्त किया।

तीर्थत्रक्षेत्र कमेटी की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती सरिता जैन का स्वास्थ्य सुधार की ओर

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव-२०१८ की राष्ट्रीय अध्यक्षा, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रथम महिला पूर्व अध्यक्षा सहित अनेक पदों पर अपनी सेवाएँ प्रदान करने वाली नेत्री श्रीमती सरिता एम.के.जैन (चेन्नई) विगत १५-२० दिनों से कोरोना बीमारी से ग्रसित हैं,लोगों ने उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु शुभकामनाएँ व्यक्त की। तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचंद्र जैन मुंबई एवं राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष/महामंत्री श्री राजेंद्र के. गोधा, राजस्थान ने पत्र लिखकर उनके शीघ्र स्वास्थ्य की कामना की है।

शिखरजी वंदना करने वाले तीर्थयात्रियों से वसूल रहे थे 10 रु. का जजिया कर, तीर्थक्षेत्र कमेटी व जैन समाज के विरोध के बाद लिया वापस

हाल ही में मधुबन स्थित अतिथिगृह में प्रशिक्षु आईएएस श्री सैय्यद रियाज अहमद ने एक बैठक आयोजित की थी जिसमें शिखरजी में कार्यरत संस्थाओं के प्रबंधकों को बुलाया गया। बैठक में सभी संस्थाओं को सम्मेद शिखर जी की साफ़-सफाई में सहयोग करने की बात कही। साथ ही जय श्री पारसनाथ स्वच्छता समिति द्वारा पारसनाथ पहाड़ की वंदना करने वाले तीर्थयात्रियों से 10 रु. का शुल्क वसूले जाने का निर्देश दिया गया। यह समाचार दैनिक भास्कर में प्रमुखता से छपा था।

शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री श्री राज कुमार अजमेरा ने इसकी सूचना तुरंत ही भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभात चंद्र जैन एवं राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष तथा महामंत्री श्री राजेंद्र के. गोधा को दी, दोनों ने इस कदम को घोर निंदनीय बताया और कहा कि इस प्रकार के जजिया कर को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। उन्होंने इस संबंध में उपायुक्त गिरिडीह श्री राहुल सिन्हा एवं एसपी को विरोध पत्र भी लिखा। महामंत्री श्री राज कुमार अजमेरा ने उपायुक्त कार्यालय में बात करके अधिकारी से माँग की कि इसे तुरंत रोका जाए।

दिनांक 1 अप्रैल 2021 को मधुबन बाजार सेवा समिति व जय श्री पारसनाथ स्वच्छता समिति की बैठक आयोजित की गयी जिसमें मधुबन की सभी संस्थाओं ने 10 रुपये के शुल्क की वसूली पर अपनी आपत्ति दर्ज करवाई। बैठक में निर्णय लिया गया कि तीर्थ यात्रियों से लिया जाने वाला 10 रुपये का कूपन अब नहीं काटा जायेगा और वसूली तत्काल प्रभाव से बंद की जाती है। तीर्थक्षेत्र कमेटी मधुबन कार्यालय से वरिष्ठ प्रबंधक सुमन कुमार सिन्हा, जैन श्वेताबर कोठी के दीपक बेगानी, संजीव पांडेय, सिद्धायतन के प्रबंधक श्री ऋतेश जैन, तेरापंथी कोठी से श्री संजय तिवारी आदि उपस्थित रहे।.

समाचार

श्री आदिनाथ जन्म कल्याणक के दिन 108 कलशों से अभिषेक

अशोक नगर (म.प्र.), असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प का प्रथम उपदेश देने वाले भगवान वृषभदेव ने भोगभूमि से कर्मभूमि का प्रादुर्भाव होने पर मानव जीवन के मूल्यों का निर्धारण किया था। दर्शनोदय तीर्थक्षेत्र थूबोनजी के खड़े बाबा भगवान आदिनाथ स्वामी के जन्म जयंती महोत्सव पर एक सौ आठ ऋद्धि मंत्रों के उच्चारण के साथ महामस्तकाभिषेक किया गया।

तीर्थंकर दिवस के रूप में मनाया जन्म कल्याणक महोत्सव

समारोह में थूबोनजी कमेटी के महामंत्री विपिन सिंघई ने कहा कि परम पूज्य मुनि पुगंव सुधासागरजी महाराज ने भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी व जैन समाज का आह्वान किया कि आज का शुभ दिन तीर्थंकरत्व के प्रवर्तन का दिवस है, इसीलिए हम इसे तीर्थंकर दिवस के रूप में मना रहे हैं।

महाआरती

तीर्थंकर भगवान आदिनाथ स्वामी के जन्म कल्याणक की पूर्व संध्या पर भगवान की महा आरती अशोक नगर के लोकप्रिय विधायक जजपाल सिंह जज्जी ने की। इसके साथ ही विधायक जज्जी ने कहा कि मैं वचनबद्ध हूँ कि तीर्थक्षेत्र के विकास के लिए सरकार से हर सम्भव मदद दिलवाएँगे।

डॉ. विजयलक्ष्मी जैन का निधन

ख्यात शिक्षाविद डॉ. विजयलक्ष्मी जैन का दिनांक 5 अप्रैल, 2021 के दिन दिल्ली के सर गंगाराम हॉस्पिटल में 73 वर्ष की उम्र में निधन हो गया है। उनके निधन से समाज ने एक कुशल महिलारत्न, मिलनसार, सामाजिक कार्यकर्त्री, कुशल लेखिका, प्रभावक वक्ता, मधुर गायिका, नृत्यकला विशारद, कर्तव्यनिष्ठ एवं प्रभावक व्यक्तित्व खो दिया है। दीर्घकाल तक मूर्तिदेवी कन्या विद्यालय इण्टर कॉलेज, नजीबाबाद (जिला-बिजनौर) उ.प्र. में प्रवक्ता रहकर वहीं पर लम्बे समय तक प्राचार्या के पद को अलंकृत किया। उनके प्राचार्यत्व काल में विद्यालय ने अपनी गरिमा, शिक्षा, खेल, अनुशासनप्रियता और परीक्षा परिणाम के क्षेत्र में मानक उपलब्धियों के सर्वोच्च शिखर को छुआ था। उन्होंने स्थानीय, जिला स्तरीय और प्रादेशिक अनेक पुरस्कार प्राप्त किए थे। उनकी पढ़ाई हुई शिष्याएँ आज भी उनके यशोगान को गाती हुई नहीं थकती हैं। आज सभी उनके वियोग से विह्वल हैं। अपने पीछे वे पति डॉ. रमेशचन्द जैन, पुत्र- पीयूष जैन, पुत्री-स्मिता जैन, मानसी जैन तथा भरे पूरे परिवार को छोड़ गई हैं। मृत्यु से पूर्व वे अपने निवास से ही छात्राओं को ऑनलाइन मार्गदर्शन दे रही थीं। प्रार्थना है कि भगवान् की कृपा से उनका आगामी जीवन सुख और शान्तिमय हो।

- प्रियम् जैन,सनावद

अरविंद सिघई को मिला मध्यांचल के अध्यक्ष का कार्यभार

संत शिरोमणि परम पूज्य गुरुदेव के आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज के चरणों में सदा समर्पित रहने वाले दर्शनोदय तीर्थ के खड़े बाबा भगवान आदिनाथ स्वामी के परम भक्त श्री दिगंबर जैन दर्शनोदय अतिशय तीर्थक्षेत्र थूबोनजी के पूर्व अध्यक्ष, वीर सेवा दल मुंगावली के संरक्षक सदस्य, मध्यांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री, दान के क्षेत्र में अग्रणी, मुँगावली नगर की शान, पूज्य पूज्य मुनि पुगंव श्री सुधासागर जी महाराज के व अन्य साधुओं के विश्वासपात्र "श्री अरविंद कुमार जैन मक्कू भैया" को कार्यवाहक अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया है।

मध्यांचल के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री विमल सोगानी के आकस्मिक निधन से यह पद खाली हो गया था इसलिए कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभात चंद्र जी जैन व कार्याध्यक्ष व महामंत्री श्री राजेंद्र के. गोधा जी ने चुनाव संपन्न होने तक अरविंद कुमार जैन "मक्कू भैया" को कार्यवाहक अध्यक्ष का कार्यभार सौंपा है।

मध्यांचल के अध्यक्ष पद के चुनाव

मध्यांचल के चुनाव मध्य प्रदेश सरकार के कोरोना दिशा निर्देशानुसार शीघ्र सम्पन्न होंगे। तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से श्री हुकम जी जैन काका, कोटा पर्यवेक्षक होंगे। श्री स्वतंत्र जैन खिमलासा को मुख्य चुनाव अधिकारी बनाया गया है।

विजय जैन धुर्रा, सह सम्पादक तीर्थ वंदना

श्री चंवलेश्वर तीर्थ में होगी भव्य त्रिकाल चौबीसी की स्थापना

चंवलेश्वर पार्श्वनाथ ने राजस्थान को सब कुछ दिया है, अब आपकी बारी कुछ करने की - सुधासागरजी

श्री चंबलेश्वर पार्श्वनाथ "देशनोदय" दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थ, चैनपुरा जिला भीलवाड़ा राजस्थान में विराजमान संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज के आशीर्वाद व प्रेरणा से चंवलेश्वर तीर्थ में भव्य त्रिकाल चौबीसी का निर्माण होगा। तीर्थवंदना के सहसम्पादक विजय जैन धुर्रा ने बताया कि इन चौबीस जिनालयों में भूत, वर्तमान और भविष्य काल संबंधी तीर्थंकर प्रभु की सवा पाँच फुट अवगाहना की प्रतिमाएँ विराजमान की जायेंगी। परम पूज्य गुरुदेव मुनिपुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने कहा कि हजारों वर्षों से चंवलेश्वर बाबा यहाँ विराजमान हैं। अब यहाँ विशाल मूल मन्दिर होगा जहाँ विशाल प्रतिमा विराजमान होगी।

जिला भीलवाड़ा के तत्वावधान में निर्मित होने वाली इस भव्य त्रिकाल चौबीसी को सफेद पाषाण से निर्मित किया जायेगा। मुनिश्री की परम भक्त श्राविका श्रेष्ठ श्रीमती आभा विनय जैन अहमदाबाद ने सर्व सुविधाओं से युक्त एक विशाल धर्मशाला बनवाने की घोषणा की। साथ ही विशाल संत शाला का निर्माण श्री सुभाष बागपत हरियाणा द्वारा किया जाएगा।

संबंध को तोड़ो मत, बल्कि जोड़ो। तोड़ने में संबंध बिगडता है छोड़ने में संबंध नहीं बिगड़ता

चंवलेश्वर तीर्थ में ऐतिहासिक पदयात्रा के समापन पर विशाल सभा को संबोधित करते हुए मुनि पुगंव सुधासागरजी महाराज ने कहा कि भीलवाड़ा जिला ही नहीं पूरा राजस्थान एक भजन गाते हुए भगवान पार्श्वनाथ स्वामी के चरणों में आता है-

पारस प्यार लागे चंवलेश्वर प्यारा लागे

आज अब समय आ गया है कि हम चंवलेश्वर वाले बाबा को कुछ दें और इस तीर्थ क्षेत्र के उद्धधार के लिए कदम उठायें। पर्वत पर तो स्थान नहीं है लेकिन उपयुक्त स्थल पर भव्य विशाल जिनालय के साथ त्रिकाल चौबीसी की स्थापना की जायेगी। आपने भगवान से संबंध बना लिया है तो उसे स्थायी रूप से जोड़ो।

उन्होंने कहा कि संबंध को तोड़ो मत जोड़ो तोड़ने में संबंध बिगडता है। छोड़ने में संबंध नहीं बिगड़ता, तोड़ने में कषाय आती है।

निर्यापक श्रमण परम पूज्य मुनि श्री योगसागरजी महाराज संघ सहित नेमावर पहुँचे

नेमावर तीर्थ- -संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य निर्यापक श्रमण मुनि योगसागरजी, मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज मुनि श्री अक्षय सागर जी महाराज सघ सहित दक्षिण भारत से विहार करते हुए 23 तारीख को नेमावर तीर्थ पहुँचे जहाँ मुनि संघ ने योगसागरजी महाराज की अगवानी की संघ ने नेमावर तीर्थ पहुँचकर संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्या सागर जी महाराज के चरणों की वंदना की।

मोराजी के आधार श्री हरिश्चंद्र जैन नेताजी का जन्म शताब्दी समारोह

सागर नगर की सबसे पुरानी संस्था मोराजी के 35 वर्ष तक वर्ष तक प्रबंधक रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक श्री हरिश्चंद्र जैन नेताजी के जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पूर्व केंद्रीय मंत्री और टीकमगढ़ के सांसद वीरेंद्र कुमार ने कहा सहजता और सरलता के साथ पूर्णतः ईमानदारी से काम करना उनकी शैली थी। आपात्काल में जिले के तीन पिता-पुत्र 19 महीनों तक जेल में रहे हैं, उनमें हरिश्चंद्र जैन - अरुण जैन, अमर सिंह-वीरेंद्र कुमार (सांसद) तथा विद्याधर तिवारी-विनोद तिवारी रहली थे।

सांसद श्री कुमार ने बताया की जेल में जब सभी लोग बंद थे तो नेता जी स्वाध्याय करने के बाद जेल में ही शाखा लगाते थे। वे सभी को समझाते थे और ज्ञान देते थे, डाँटते भी थे लेकिन उनकी डाँट प्यारभरी होती थी। एक बार पंजाब में उनके ऊपर हमला हुआ था और मरा हुआ समझकर उन्हें राबी नदी में फेंक दिया गया था लेकिन उनकी आयु थी और वह बच गए। सागर आकर फिर से समाज सेवा कार्य में जुट गए। हरिश्चंद्र जी के सुपुत्र अरुण जी ने सागर का नाम पूरे भारत में ऊँचा किया है। इस समय वे अखिल भारतीय स्तर के पदाधिकारी हैं। सरकार बनने के बाद भी कभी किसी परिजन या रिश्तेदार नौकरी मिले या अन्य सुविधाएँ मिले इसके लिए कोई प्रयास नहीं किया है। अरुण जैन भी व्यापक विचार के धनी हैं और अपने पिताजी के आदर्शों पर चलने वाले हैं। हरिश्चंद्र जी पर कभी कोई आरोप नहीं लगे, इस परिवार के त्याग, तपस्या और बलिदान का पूरा शहर मानता है।

राजकुमार जैन सतना ने कहा हरिश्चंद्र जी वर्णी जी की बगिया के फूल थे। उन्होंने बुंदेलखंड के बच्चों को मोराजी में माता-पिता जैसा स्नेह दिया।

कार्यक्रम में नेताजी की बगिया के फूल नामक पुस्तिका का विमोचन मुनि श्री विलोक सागर महाराज और मुनि श्री विशोध सागर महाराज के सान्निध्य में

प्रमुख अतिथियों के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से मंत्री भूपेंद्र सिंह, सांसद राज बहादुर सिंह, विधायक प्रदीप लारिया, शैलेंद्र जैन पूर्व विधायक सुधा जैन, महेश बिलहरा, रिटायर्ड एएसपी महेन्द्र जैन, मुकेश जैन ढाना, केवीएस ठाकुर, ज्ञानचंद जैन, कोमल चंद जैन, अरविंद हार्डीकर, सुभाष कण्ड्या, प्रो. अमरकुमार जैन, सचिन जैन, विक्रम मौर्य, सतीश जोशी, जय मिश्रा, अनिल जैन, इंजी. विनोद जैन, मुकेश जैन कवि, अरविंद जैन, विवेक जैन, आदित्य जैन, श्रीमती रश्मि जैन, डॉ शक्ति जैन, भक्ति जैन शुकदेव मिश्रा, राजेश केशरवानी संध्या भार्गव,अनिल काजू, लालू घोषी उमेश सराफ आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर मंगलाचरण यामिनी जैन और मित्रा जैन ने किया। नेता जी के जीवन चरित्र पर उनकी बिटिया डॉ भारती जैन भोपाल ने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम को प्रचारक नरेंद्र कुमार जैन, रिटायर्ड आईएएस सुरेश जैन, दयाचंद शास्त्री,हरीश जैन पाटन, नन्हे लाल शास्त्री, अरविन्द जैन, राजकुमार शास्त्री ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन अरविंद जैन ने किया।

एमडी न्यूज, सागर

भारत बने भारत अभियान कार्यक्रम सम्पन्न

पुणे। विडम्बना ही है कि भारत एक अकेला ऐसा देश है जिसके तीन तीन नाम हैं- भारत, इण्डिया और हिन्दुस्तान। अब से करोड़ों वर्ष पूर्व आदि तीर्थंकर आदि ब्रह्मा ऋषभदेव हुए। इस बात को वेदों में उल्लेख सहित विश्व के प्रायः सभी धर्म मानते हैं। ऋषभदेव ने ही मानव को असि, मसि, कृषि आदि षड्विद्यायें सिखाई। उन्होंने अपने पुत्र भरत को राज्य सौंपकर सन्यास ग्रहण किया। महाराज भरत ने छह खण्ड पर लम्बे समय तक राज्य किया, परन्तु प्रमुख कन्द्र भारतवर्ष ही रहा। करोड़ों वर्षों का इतिहास किसी देश के पास नहीं, परन्तु भारतवर्ष में यह परम्परा चलती रही। उन्हीं ऋषभदेवपुत्र भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा।

हम 'इण्डिया' जैसे थोपे गये नाम को क्यो ढो रहे हैं। हम अपने ऐतिहासिक नाम को ही आगे बढ़ाते हुए 'एक देश की एक पहचान, भारत भारत और भारत ही नाम' को अग्रेसित करते हुए आगे बढ़ें। ये विचार संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के आशीर्वाद से दिगंबर जैन महिला महासमिति का अभियान "भारत बने भारत" के अंतर्गत शुभचिंतक फाउंडेशन ट्रस्ट पुणे द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 10 अप्रैल शनिवार को आनलाइन आयोजित भव्य कार्यक्रम में वक्ताओं ने रखे।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्राविकारत्न व्रती श्रीमती सुशीला पाटनी, श्रीमती शांता पाटनी एवं श्रीमती तारिका पाटनी जी थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दिगंबर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ मणीन्द्र जैन एवं महिला महासमिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती शीला डोडिया जी ने की। उन्होंने संस्था के अभियानों, गतिविधियों से सबको अवगत कराया। आदरणीय डोडिया जी ने भारत बने भारत अभियान के प्रयोजनों पर प्रकाश डाला।

मुख्य वक्ता के रूप में ब्रह्मचारिणी विजय लक्ष्मी दीदी जी एवं अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जैन विदुषी डॉ नीलम जैन ने श्रोताओं को धर्म संस्कृति और भारत को इण्डिया कहने के दुष्परिणामों को बताया कार्यक्रम में राष्ट्रीयता और भारतीयता का गौरव गान प्रतिष्ठित कवियों सर्वश्री दिव्य कमल ध्वज, अमित झा राही, विनीत शंकर, आनंद सिंह, सत्यम् श्रीवास्तव ने किया एवं डॉ राज बुंदेली द्वारा भारत का गुणगान ओजस्विता के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ ममता जैन ने किया। दीप प्रज्वलन श्री स्वप्निल मुकुलिका शाह द्वारा किया गया, मंगलाचरण श्रीमती मीना अजमेरा द्वारा एवं देश भक्ति नृत्य श्रीमती सोनल जैन द्वारा किया गया।

डॉ महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज',

झारखंड की राज्यपाल ने हजारीबाग में किया संयम कीर्ति स्तंभ का लोकार्पण

हजारीबाग --झारखंड की राज्यपाल ने संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्या सागर जी महाराज के परम प्रभाव शिष्य मुनि श्री प्रमाणसागर जी की जन्म स्थली हजारीभाग में संयम स्वर्ण कीर्ति स्तंभ का उद्घाटन मुनि संघ के सान्निध्य में किया।

आचार्य कुंदकुंद की जन्मभूमि कोनाकोंडला (आंधप्रदेश) के विकास के लिए देशभर के जैन समाज से अपील

तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रस्तावित योजना में सहभागी बनें

श्रुतधर आचार्य की परम्परा में कुन्दकुन्दाचार्य का स्थान महत्वपूर्ण है। इनकी गणना ऐसे युगसंस्थापक आचार्यों के रूप में की गयी है, जिनके नाम से उत्तरवर्त्ती परम्परा कुन्दकुन्द-आम्नाय के नाम से प्रसिद्ध हुई है। किसी भी कार्य के प्रारम्भ में मंगलरूप में इनका स्तवन किया जाता है। जिस प्रकार भगवान महावीर, गौतम गणधर और जैनधर्म मंगलरूप हैं, उसी प्रकार कुन्दकुन्द आचार्य भी मंगलरूपी हैं। इन जैसा प्रतिभाशाली आचार्य और द्रव्यानुयोग के क्षेत्र में प्रायः दूसरा दिखलाई नहीं पड़ता। कुन्दकुन्द भगवान की जन्म भूमि कोनाकोंडला जिसे आज सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध होना चाहिए था आज यह स्थान समाज से विलुप्त सा प्रतीत होता दिखाई दे रहा है। जैन धर्म को जन-जन तक को पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले हमें अनेकों ग्रन्थ प्रदान करने वाले जिसकी वजह आज हम भगवान जिन की वाणी और जैन धर्म को जान पा रहे, उनके उपेक्षित पड़े जन्म स्थान को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी विकसित करने का कार्य कर रही है और इस कार्य को पूर्ण करने के लिए समस्त समाज का सहयोग अति आवश्यक है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी देश-विदेश की समाज से अपील करती है कि हमारे आचार्यों में सबसे प्रमुख आचार्य कुन्दकुन्द भगवन के जन्म स्थान कोनाकोंडला (आंधप्रदेश) के विकास के लिए तन-मन धन से तीर्थक्षेत्र कमेटी का सहयोग करें।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ने इस वर्ष पहाड़ के वृक्षारोपण का कार्य शुरू किया है, तमिलनाडु की भांति आंधप्रदेश में प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के आसपास के मुख्य-मार्गों, राजमार्गों पर क्षेत्र का नाम व दूरी दर्शाने वाले बोर्ड लगाए गए हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने कोनाकोंडला विकास के लिए आरंभिक रूप से 2 करोड़ व्यय करके विकास की योजना बनाई है जिसके लिए आप मुक्त हस्त से दान कर इस ऐतिहासिक कार्य के लिए विभिन्न प्रकार से सहभागी बन सकते हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की अपील

तीर्थक्षेत्रों और शहरों की धर्मशालाओं को Dharmashala.in से जोड़ें

आज डिजिटल माध्यम को प्राथमिकता देते हुए सब कुछ ऑनलाइन होता जा रहा है, बिजली बिल भुगतान से लेकर विमान का टिकट तक व्यक्ति कम समय से घर बैठे आसानी से बुक कर रहा है। लेकिन अपने तीर्थक्षेत्रों में अभी तक इस प्रकार की सुविधा को चालू नहीं की गयी है, इसी बात को ध्यान में रखते हुए तीर्थक्षेत्रों के सरंक्षण की दिशा में भारतवर्षीय दिगबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने तीर्थक्षेत्रों और शहरों मे स्थित धर्मशालाओ को जोड़ने के लिए एक मंच तैयार किया है जिसका नाम है: "धर्मशाला.इन"।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ने इस योजना को देश-विदेश में पहुँचाने की योजना बनाई है अभी तक भारत के सभी छोटे-बड़े तीर्थों एवं विभिन्न शहरों से संपर्क कर वहां पर स्थित धर्मशालों की जानकारी एकत्रित की जा रही है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी भारत के सभी तीर्थक्षेत्रों व शहरों में स्थित धर्मशालों के पदाधिकारियों/ ट्रस्टियों एवं देश-विदेश की सामज से अपील करती है कि देशभर की सभी जैन धर्मशालाओं को जोड़ने वाली इस योजना Dharmashala.in से जुड़ें और जुड़ने वाली सभी संस्थाओं को तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से टेबलेट, धर्मशाला प्रबंधन सोफ्टवेयर तथा एलईडी बोर्ड निःशुल्क दिया जायेगा ।

- इस योजना मुख्य प्रायोजक के लिए 5,01,000/-रु., सह-प्रायोजक 1,51,000/- रु (कुल 5) एवं साधारण प्रायोजक 51,000/- (कुल 5) का दान कर सहभागी बन सकते हैं।
- इस योजना के अंतर्गत प्राम्भिक रूप से प्रत्येक तीर्थक्षेत्र पर एक-एक धर्मशाला के नाम का एलईडी बोर्ड लगाया जाएगा है, 5100/- रु. की दान राशि प्रदान कर सहभागी बन सकते हैं।

यदि आपको इस संबंध में किसी प्रकार अतिरिक्त जानकारी या तकनीकी सहायता की आवश्यकता हो तो श्री निखिल जैन व उनकी टीम से 090211-95528 पर संपर्क कर सकते हैं।

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2019-21
Jain Tirth vandana, English-Hindi April 2021
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2019-21,
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by **UMANATH RAMAJOR DUBEY** on behalf of **BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE**, Printed at **TRIMURTI PRINTERS**, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRA BAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : **UMANATH RAMAJOR DUBEY**